पूर्ण आनन्द लहरि

पुष्पः – १ Oct - Nov 2013 दलं –७

न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं ।
न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं ॥

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

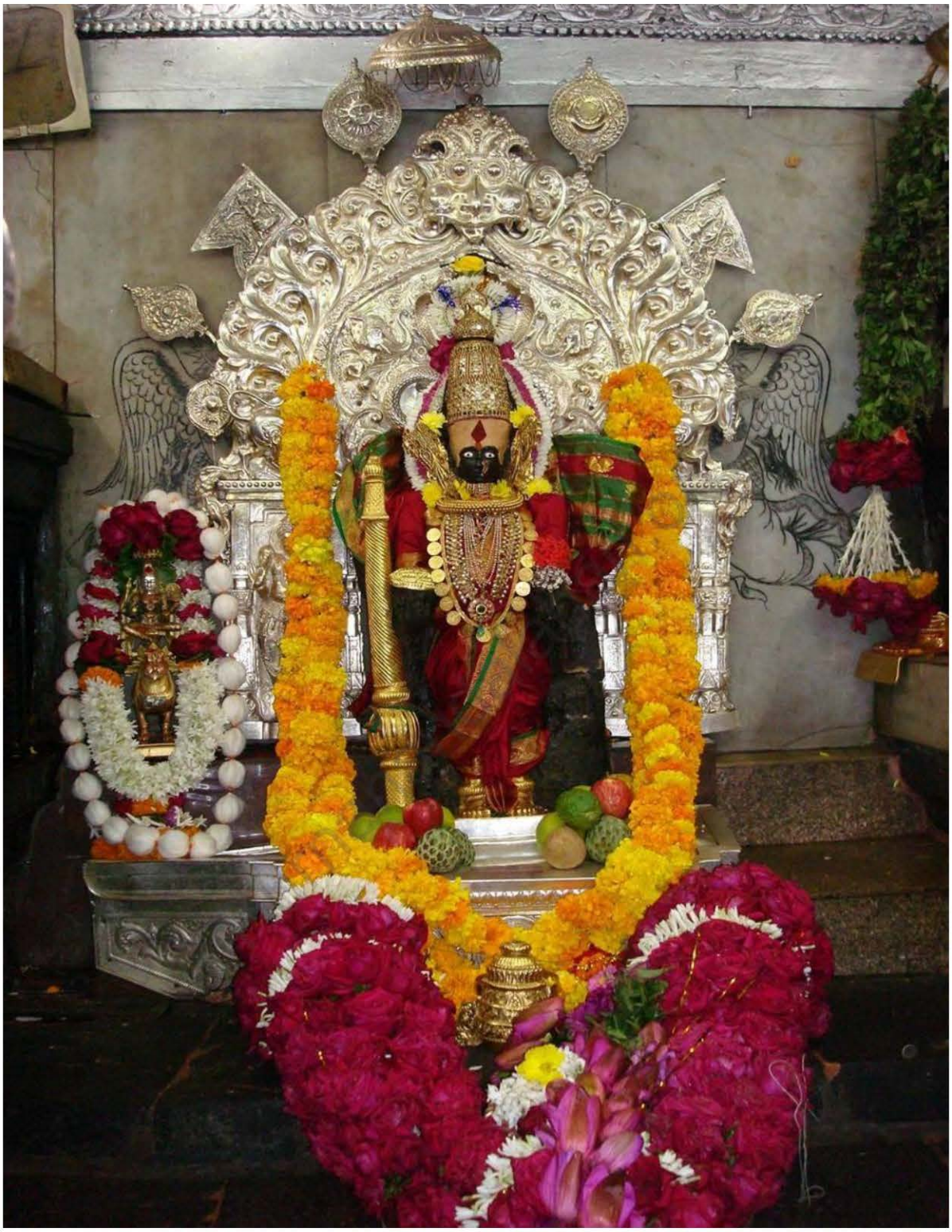

कोल्हापुरनिवासिनी श्री महालक्ष्म्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः

Table of Contents:

#	Topics	Page
1	Introduction	3
2	Devi AshtAngam	4
3	shrInagara vimarshanam	7
4	Sharad Rutu Avaranam	9
5	navAkShari mantra japa kramaH	19
6	caNDI AvaraNa kramaH	23
7	navAkSharI trishati	38
8	ShrI caNDI Shastyuttara trishati arcanam	47
9	caNDI hrUdayaM	53
10	Laghu durgA saptashati shlOkaH	56
11	Guru kIlakaM	59
12	Sarasvati stOtram (siddha sArasvata mantra Ghatitam)	62
13	The asurAs of dEvI mAhAtmyaM	65
14	SundarI and kAlI	70
15	Thiruvadi cirappu – by SAdhurAm swamigal	78
16	Q & A - sadA vidyA anusaMhatiH	93

© Purnanandalahari.org ©

॥ शिवादि गुरुभ्यो नमः ॥

Introduction

The auspicious sharad navarAtrI falls during this month and hence this issue has been filled with the tantric and tatvAtmaka details about caNDikA paramEshvarI. In addition, photographs of the various caNDikA paramEshwarI dieties in the key temples within India are also included.

The caNDI mantrajapa krama, AvaraNa pUjA kramA, navAkSharI mantrOkta trishati (source – caNDI rahasyAm), caNDI Shastyuttara trishati (source –vidhyArNava tantra), sarasvatI stOtra (that can be chanted on the sarasvatI pUjA day on mahA navamI) based on the siddha sArasvata mantra, caNDI hRudayaM (source – DurgA kalpadrumA), mArkaNDEya krUta laghu durgA saptashatI shlOkam (source – durgA kalpadrumA), guru kIlakam (source – durgA kalpadrumA) are included in this issue.

The article "demons of dEvImAhAtmyA" makes an attempt to scratch some of the inner meanings of the purANic demons and how they relate to demons that we deal within ourselves in the day-to-day lives. The interrelation of the dEvImAhAtmya and the caNDI navAkSharI mantra makes it easy for the sAdhakA to win over the evil forces by following the dharmic path to reach the real destination of self-realization.

The article "Sundarl and kAll" by shrI AtmAnandanAtha is a real treat to read. He has done considerable research to bring out the similarities between the two Adhya shaktI's. While the paths may differ, the article clearly demonstrates that these two shaktIs are in fact the two sides of the same coin.

The final article about tiruvadI sirappu (pAdukA mahimnA) by shrI sAdhurAm svAmigal, explains the importance in very simple terms and it also demonstrates an extensive research performed across various spiritual and tantric literature to support the claims made. Since the parvA dinAs of shrI cidAnandanAthA and shrI pUrNAnandanAthA falls during this month, this article fits into the theme aptly.

Wishing all the upAsakAs a blissful navArAtrI. Om namaH caNDikAyai.

Lalithai vEdam sarvam.

Surrendering to the holy pAdukAs of Shri Guru,

प्रकाशाम्बा समेत प्रकाशानन्दनाथ

© Purnanandalahari.org ©

देवी मान अष्टाङ्गम्

श्री आदिगुरोः परशिवस्य आज्ञया प्रवर्तमान देवीमानेन षड्त्रिंशत् तत्वात्मक सकल प्रपञ्च सृष्टि स्तिथि संहार तिरोधान अनुग्रह कारिण्याः पराशक्तेः ऊर्ध्व भूविभ्रमे नं घ्राण तत्व महाकल्पे दं चक्षुस्तत्व कल्पे थं त्वक् तत्व महायुगे खं सदाशिव तत्व युगे दं चक्षु तत्व परिवृतौ गं ईश्वर तत्व वर्षे – श्री ललितात्रिपुरसुन्दरीपराभ–ारिका प्रसादसिद्ध्यर्थे यथा शक्ति (जप क्रमं) सपर्याक्रमम् निर्वतयिष्ये ।

	OCT 4	OCT 5	OCT 6	OCT 7
मासे	ईं पुष्टि	ईं पुष्टि	ईं पुष्टि	ईं पुष्टि
तत्व दिवसे	लं रूप	वं रस	शं गन्ध	षं आकाश
दिन नित्यायां	उं वह्निवासिनि	ऊं वज्रेश्वरि	ऋं शिवदूति	ॠं त्वरिता
वासरे	विमर्शानन्दनाथ	आनन्दानन्दनाथ	ज्ञानानन्दनाथ	सत्यानन्दनाथ
घटिकोदये	य – कार	अ – कार	ए – कार	च – कार
	OCT 8	OCT 9	OCT 10	OCT 11
मासे	ईं पुष्टि	ईं पुष्टि	ईं पुष्टि	ईं पुष्टि
तत्व दिवसे	सं वायु	हं वह्नि	ळं जल	क्षं पृथ्वि
दिन नित्यायां	लृं कुलसुन्दरि	ळृं नित्या	एं नीलपताका	ऐं विजय
वासरे	पूर्णानन्दनाथ	स्वभावानन्दनाथ	प्रतिभानन्दनाथ	सुभगानन्दनाथ
घटिकोदये	त – कार	य – कार	अ – कार	ए – कार
	OCT 12	OCT 13	OCT 14	OCT15
मासे	उं तुष्टि	उं तुष्टि	उं तुष्टि	उं तुष्टि
तत्व दिवसे	अं शिव	कं शक्ति	खं सदशिव	गं ईश्वर
दिन नित्यायां	ओं सर्वमन्गला	औं ज्वालामालिनि	अं चित्रा	अं चित्रा
वासरे	प्रकाशानन्दनाथ	विमर्शानन्दनाथ	आनन्दानन्दनाथ	ज्ञानानन्दनाथ
घटिकोदये	च – कार	त – कार	य – कार	अ – कार

© Purnamandalahari.org ©

	OCT 16	OCT 17	OCT 18	OCT 19
मासे	उं तुष्टि	उं तुष्टि	उं तुष्टि	उं तुष्टि
तत्व दिवसे	घं सुद्धविध्य	ङं माया	चं कला	छं अविद्या
दिन नित्यायां	औं ज्वालामालिनि	ओं सर्वमन्गाला	ऐं विजया	एं नीलपताका
वासरे	सत्यानन्दनाथ	पूर्णानन्दनाथ	स्वभावानन्दनाथ	प्रतिभानन्दनाथ
घटिकोदये	ए – कार	च – कार	त – कार	य – कार
	OCT 20	OCT 21	OCT 22	OCT 23
मासे	उं तुष्टि	उं तुष्टि	उं तुष्टि	उं तुष्टि
तत्व दिवसे	जं राग	झं काल	ञं नियति	टं पुरुष
दिन नित्यायां	लृं नित्या	लॄं कुलसुन्दरि	ॠं त्वरिता	ऋं शिवदूति
वासरे	सुभगानन्दनाथ	प्रकाशानन्दनाथ	विमर्शानन्दनाथ	आनन्दानन्दनाथ
घटिकोदये	अ – कार	ए – कार	च – कार	त – कार
	OCT 24	OCT 25	OCT 26	OCT 27
मासे	उं तुष्टि	उं तुष्टि	उं तुष्टि	उं तुष्टि
तत्व दिवसे	ठं पकृति	डं अहंकार	ढं बुद्धि	णं मनस्
दिन नित्यायां	ऊं वज्रेश्वरि	उं वह्निवासिनि	ईं भेरुण्डा	इं निथ्यक्लिन्ना
वासरे	ज्ञानानन्दनाथ	सत्यानन्दनाथ	पूर्णानन्दनाथ	स्वभावानन्दनाथ
घटिकोदये	य – कार	अ – कार	ए – कार	च – कार
	OCT 28	OCT 29	OCT 30	OCT 31
मासे	उं तुष्टि	उं तुष्टि	उं तुष्टि	उं तुष्टि
तत्व दिवसे	तं श्रोत्र	थं त्वक्	दं चक्षुः	धं जिह्वा
दिन नित्यायां	आं भगमालिनि	अं कामेश्वरी	अं कामेश्वरी	आं भगमालिनि
वासरे	प्रतिभानन्दनाथ	सुभगानन्दनाथ	प्रकाशानन्दनाथ	विमर्शानन्दनाथ
घटिकोदये	त – कार	य – कार	अ – कार	ए – कार
	NOV 1	NOV 2	NOV 3	NOV 4
मासे	उं तुष्टि	उं तुष्टि	उं तुष्टि	उं तुष्टि
तत्व दिवसे	नं घ्राण	पं वाक्	फं पाणि	बं पाद
दिन नित्यायां	इं निथ्यक्लिन्ना	ईं भेरुण्डा	उं वह्निवासिनि	ऊं वज्रेश्वरि
वासरे	आनन्दानन्दनाथ	ज्ञानानन्दनाथ	सत्यानन्दनाथ	पूर्णानन्दनाथ
घटिकोदये	च – कार	त – कार	य – कार	अ – कार

©Purnamandalahari.org ©

पर्वा दिनेभ्यः		
	America	India
अमावास्या	4 Oct 2013	5 Oct 2013
मास सङ्क्रान्ति	17 Oct 2013	17 Oct 2013
पूर्णिमा	18 Oct 2013	18 Oct 2013
कृष्ण अष्टमि	26 Oct 2013	27 Oct 2013
कृष्ण चतुर्दशि	2 Nov 2013	2 Nov 2013
अमवास्या	3 Nov 2013	3 Nov 2013

अन्य पूजा दिनेभ्यः		
	America	India
शुक्ल चतुर्थि	8 Oct 2013	8 Oct 2013
कृष्ण चतुर्थि	22 Oct 2013	23 Oct 2013

विशेष पर्वा दिनेभ्यः		
	America	India
नवरात्रि आरम्भः	5 Oct 2013	5 Oct 2013
आनन्दानन्दनाथ जन्मदिन पर्वा	5 Oct 2013	5 Oct 2013
चिदानन्दनाथ व्याप्ति पर्वा	9 Oct 2013	10 Oct 2013
पूर्णानन्दनाथ व्याप्ति पर्वा	24 Oct 2013	25 Oct 2013
सरस्वति पूजा	12 Oct 2013	13 Oct 2013
विजय दशमि	13 Oct 2013	14 Oct 2013

ShrInagara vimarshanaM

In the last issue, we looked at the middle three layers of the cintAmaNi gRuhA with the houses of the respective AvaraNa dEvatAs. On the top of the sixth layer is the seventh layer that is 30 ft tall and 900 ft wide for each of the AvaraNa dEvI's residing in this layer. This layer is called sarvarOgahara cakrA and the 8 AvaraNa dEvi"s are - vashiNI vAgdEvatA along with the sixteen vowels, kAmEshvarI along with the ka-vargA, mOdinI along with the ca-vargA, vimalA along with the Ta-vargA, aruNA along with the ta-vargA, jayinI along with the pa-vargA, sarvEshvarI along with ya, ra, la and va. Finally, kaulini stays with the remaining mAtrukAs. These AvaraNa dEvatAs love wearing pearl jewels and are always in the blissful mode of singing the songs and proses about lalitAmbA. These AvaraNa dEvatAs reveal the kAvyAs, nAtakAs, meanings of vEdAntAs, alankArAs as sweet nectar. All of these dEvatAs are commonly called as rahasya yOgiNI. This layer is headed by tripurAsiddhA cakrEshwati and ably assisted by sarvakEcarI mudrA shaktI.

On top of the seventh layer, there are steps that lead to the eighth layer that is also 30 ft tall and 900 ft wide for the astra dEvatAs. Five arrows of KAmeshvarI and Five Arrows of KAmEshwarA, the two AnkushAs, the two bows, and the two pAshAs form the main Ayudha shaktiS that reside in this layer. During the battle with BhanDAsurA, several weapons were used and they also reside in this layer. While crores of weapons were used, the key ones deserves special mention. Vajra, shakti, shatagni, bhusuNdI, musalA, kaNaya, paTTasa, mudgara, and bhiNDipAlakam. This forms one sub layer of the eigth layer and is called astra cakrA.

The remaining layers will be covered in the next issue.

<to be continued>

© Purnananda Lahari.org ©

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रूप तन्मात्रात्मक मन्दार वटिका मध्ये इषश्री ऊर्ज श्री समेत कट रसात्मने शरद् ऋतु नाथाय नमः

© Purnanandananda

शरद् ऋतुनाथ आवरणम्

पीठ पूजा –

ॐ मण्डूकादि परतत्वाय नमः ।

शरद् ऋतुनाथ आवाहनम् –

मन्दारवाटिकायां तु सदा शरदृतुर्वसन् ।
तां कक्ष्यां रक्षति श्रीमाँलोकचित्तप्रसादनः ॥

इषश्रीश्च तथोर्जश्रीस्रस्यर्तोः प्राणनायिके ।
ताभ्यां सह ऋतुः श्रीमान्निजोत्थैः पुष्पमण्डलैः ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रूप तन्मात्रात्मक मन्दार वटिका मध्ये इषश्री ऊर्जश्री समेत कट रसात्मने शरद् ऋतु नाथाय नमः – पुष्पाञ्जलि

ॐ इषश्री ऊर्ज श्री समेत शरद् ऋतु नाथ आवाहितो भव ।– आवहन मुद्रां प्रदर्शय
ॐ इषश्री ऊर्ज श्री समेत शरद् ऋतु नाथ स्थापितो भव । – स्थापण मुद्रां प्रदर्शय
ॐ इषश्री ऊर्ज श्री समेत शरद् ऋतु नाथ संस्थितो भव । – संस्थितो मुद्रां प्रदर्शय
ॐ इषश्री ऊर्ज श्री समेत शरद् ऋतु नाथ सन्निरुधो भव । – सन्निरुध मुद्रां प्रदर्शय
ॐ इषश्री ऊर्ज श्री समेत शरद् ऋतु नाथ सम्मुखी भव । – सम्मुखी मुद्रां प्रदर्शय
ॐ इषश्री ऊर्ज श्री समेत शरद् ऋतु नाथ अवकुण्ठितो भव । – अवकुण्डनमुद्रां प्रदर्शय
ॐ इषश्री ऊर्ज श्री समेत शरद् ऋतु नाथ श्री पादुकां पूजयामि नमः । – वन्दन देनु योनि मुद्रांश्च प्रदर्शय

© Purnanandalahari.org ©

षडङ्ग तर्पणम् –

ॐ ह्रां हृदयाय नमः । हृदय शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । शिरो शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रूं शिखायै वषट् । शिखा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रैं कवचाय हूं । कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रः अस्त्राय फट् । अस्त्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

लयाङ्ग तर्पणम्

ॐ शं शरद् ऋतुनाथाय नमः । – इषश्री ऊर्जश्री समेत शरद् ऋतुनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (१० वारम्)
ॐ इषश्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्जश्री श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

© Purnanandahari.org©

शारद् चक्रः

© Purnahavalahari.org ©

प्रथमावरणम् – त्रिकोणे

ॐ इषशुक्लप्रथामा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषशुक्लद्वितीया श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषशुक्लतृतीया श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः प्रथमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ शं शरद् ऋतुनाथाय नमः । – इषश्री ऊर्जश्री समेत शरद् ऋतुनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

अनेन प्रथमावरणार्चनेन श्री शरद् ऋतुनाथ प्रीयथाम् ।

द्वितीयावरणम् – पञ्चकोणे

ॐ इषशुक्लचतुर्थी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषशुक्लपञ्चमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषशुक्लषष्टी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषशुक्लसप्तमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषशुक्लाष्ठमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः द्वितीयावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ शं शरद् ऋतुनाथाय नमः । – इषश्री ऊर्जश्री समेत शरद् ऋतुनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

© Purnanandahari.org ©

अनेन द्वितीयावरणार्चनेन श्री शरद् ऋतुनाथ प्रीयथाम् ।

तृतीयावरणम् – अष्टदले

ॐ इषशुक्लनवमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषशुक्लदशमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषशुक्लएकादशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषशुक्लद्वादशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषशुक्लत्रयोदशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषशुक्लचतुर्दशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इष पूर्णिमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषकृष्ण प्रथमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः तृतीयावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ शं शरद् ऋतुनाथाय नमः । – इषश्री ऊर्जश्री समेत शरद् ऋतुनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

अनेन तृतीयावरणार्चनेन श्री शरद् ऋतुनाथ प्रीयथाम् ।

तुरियावरणम् – षोडशदले

ॐ इषकृष्ण द्वितीया श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषकृष्ण तृतीया श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

© Purnanandalahari.org ©

ॐ इषकृष्ण चतुर्थी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषकृष्ण पञ्चमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषकृष्ण षष्ठी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषकृष्ण सप्तमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषकृष्ण अष्ठमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषकृष्ण नवमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषकृष्ण दशमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषकृष्ण एकादशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषकृष्ण द्वादशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषकृष्ण त्रयोदशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इषकृष्ण चतुर्दशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ इष अमावास्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज शुक्ल प्रथमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज शुक्ल द्वितीय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः तुरियावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ शं शरद् ऋतुनाथाय नमः । – इषश्री ऊर्जश्री समेत शरद् ऋतुनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तुरियावरणार्चनम् ॥

अनेन तुरियावरणार्चनेन श्री शरद् ऋतुनाथ प्रीयथाम् ।

© Purnanandalahari.org ©

पञ्चमावरणम् – दशदल पद्मे

ॐ ऊर्ज शुक्ल तृतीया श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज शुक्ल चतुर्थी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज शुक्ल पञ्चमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज शुक्ल षष्ठी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज शुक्ल सप्तमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज शुक्ल अष्ठमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज शुक्ल नवमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज शुक्ल दशमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज शुक्ल एकादशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज शुक्ल द्वादशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः पञ्चमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्ठाः सन्तु नमः ।

ॐ शं शरद् ऋतुनाथाय नमः । – इषश्री ऊर्जश्री समेत शरद् ऋतुनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्ठसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

अनेन पञ्चमावरणार्चनेन श्री शरद् ऋतुनाथ प्रीयथाम् ।

षष्ट्यावरणम् – दशदल पद्मे

ॐ ऊर्ज शुक्ल त्रयोदशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज शुक्ल चतुर्दशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

© Purnanandalahari.org ©

ॐ ऊर्ज पूर्णिमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज कृष्ण प्रथमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज कृष्ण द्वितीया श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज कृष्ण तृतीया श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज कृष्ण चतुर्थी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज कृष्ण पञ्चमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज कृष्ण षष्ठी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज कृष्ण सप्तमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः षष्ठ्यावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ शं शरद् ऋतुनाथाय नमः । – इषश्री ऊर्जश्री समेत शरद् ऋतुनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठ्यावरणार्चनम् ॥

अनेन षष्ठ्यावरणार्चनेन श्री शरद् ऋतुनाथ प्रीयथाम् ।

सप्तमावरणम् – चतुरस्रे

ॐ ऊर्ज कृष्ण अष्टमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज कृष्ण नवमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज कृष्ण दशमी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज कृष्ण एकादशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज कृष्ण द्वादशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज कृष्ण त्रयोदशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

© Purnanandalahari.org ©

ॐ ऊर्ज कृष्ण चतुर्दशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊर्ज अमावास्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः सप्तमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ शं शरद् ऋतुनाथाय नमः । – इषश्री ऊर्जश्री समेत शरद् ऋतुनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥

अनेन सप्तमावरणार्चनेन श्री शरद् ऋतुनाथ प्रीयथाम् ।

पञ्चपूजा

लं पृथ्व्यात्मने गन्धं कल्पयामि ।
हं आकासात्मने पुष्पाणि कल्पयामि ।
यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि
रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि ।
वं अमृतामने अमृतं महानैवेद्यं कल्पयामि ।
सं सर्वात्मने ताम्बूलादि सर्वोपचारान् कल्पयामि ।

© Purnanandalahari.org ©

श्री अष्टादशभुजा महालक्ष्मी स्वरूप चण्डिकापरमेश्वरी श्री पादुकां पूकयामि नमः

नवाक्षरी मन्त्र जप क्रमः

अस्य श्री नवाक्षरी महामन्त्रस्य ।
मार्कण्डेय ऋषिः
जगती छन्दः
श्री चण्डिकापरमेश्वरी देवता ।

ऐं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं
श्री चण्डिकापरमेश्वरी महामन्त्र प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

करन्यासं	अङ्गन्यासं
ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।	ह्रां हृदयाय नमः ।
ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।	ह्रीं शिरसे स्वाहा ।
ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ।	ह्रूं शिखायै वषट् ।
ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।	ह्रैं कवचाय हुं ।
ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः ।	ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।	ह्रः अस्त्राय फट् ।

ॐ भूर्भुवस्वरों इति दिग्बन्धः

ध्यानम्

मातर्मेमधुकैटपघ्नि महिषप्राणापहारोद्यमे
हेला निर्मित धूम्रलोचनवधे हे चण्डमुण्डार्दिनि ।
निश्शेषीकृत रक्तबीजतनुजे नित्येनिशुम्भापहे
शुम्भध्वम्सिनि सम्हराशुदुरितं दुर्गे नमस्तेऽम्बिके ॥

© Purnanandaloni.org ©

पञ्चपूजा

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्धं कल्पायामि ।
हं आकाशात्मिकायै पुष्पाणि कल्पायामि ।
यं वाय्वात्मिकायै धूपं कल्पायामि ।
रं अग्न्यात्मिकायै दीपं कल्पायामि ।
वं अमृतात्मिकायैअमृतं कल्पायामि ।
सं सर्वात्मिकायै ताम्बूलादि समस्त राजोपचारान् कल्पायामि ।

मूल मन्त्रः

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

अङ्गन्यासं

ह्रां हृदयाय नमः ।
ह्रीं शिरसे स्वाहा ।
ह्रूं शिखायै वषट् ।
ह्रैं कवचाय हुं ।
ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ह्रः अस्त्राय फट् ।

ॐ भूर्भुवस्सुवरों इति दिग्विमोगः ।

© Purnanandalahari.org ©

ध्यानम्

मातर्मेमधुकैटपघ्नि महिषप्राणापहारोद्यमे
हेला निर्मित धूम्रलोचनवधे हे चण्डमुण्डार्दिनि ।
निश्शेषीकृत रक्तबीजतनुजे नित्येनिशुम्भापहे
शुम्भध्वम्सिनि सम्हराशुदुरितं दुर्गे नमस्तेऽम्बिके ॥

पञ्चपूजा

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्धं कल्पायामि ।
हं आकाशात्मिकायै पुष्पाणि कल्पायामि ।
यं वाय्वात्मिकायै धूपं कल्पायामि ।
रं अग्न्यात्मिकायै दीपं कल्पायामि ।
वं अमृतात्मिकायैअमृतं कल्पायामि ।
सं सर्वात्मिकायै ताम्बूलादि समस्त राजोपचारान् कल्पायामि ।

© PurnanandaLahari.org ©

मैसूर् साम्राज्य राज्ञी चण्डिकापरमेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि नमः

चण्डिका आवरण पूजा क्रमः

पीठ पूजा

ॐ आधारशक्त्यै नमः
ॐ प्रकृत्यै नमः
ॐ कूर्माय नमः
ॐ शेषाय नमः
ॐ पृथिव्यै नमः
ॐ सुधाम्बुधये नमः
ॐ मणिद्वीपाय नमः
ॐ चिन्तामणि गृहाय नमः
ॐ पारिजात्याय नमः
ॐ रत्नवेदिकाय नमः
ॐ मणिपीठायै नमः
ॐ धर्माय नमः
ॐ ज्ञानाय नमः
ॐ वैराग्याय नमः
ॐ ऐश्वर्याय नमः
ॐ अधर्माय नमः
ॐ अज्ञानाय नमः
ॐ अवैराग्याय नमः
ॐ अनैश्वर्याय नमः

ॐ आनन्दकन्दाय नमः
ॐ संविन्नालाय नमः

© Purnanandalahari.org ©

ॐ सर्वतत्वात्मकपद्माय नमः
ॐ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः
ॐ विकारमयकेसरेभ्यो नमः
ॐ पञ्चाशद्बीजाध्यकर्णिकायै नमः
ॐ अं द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः
ॐ वं षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः
ॐ सं दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः

ॐ सं सत्वाय नमः
ॐ रं रजसे नमः
ॐ तं तमसे नमः
ॐ आं आत्मने नमः
ॐ अं अन्तरात्मने नमः
ॐ पं परमात्मने नमः
ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ विजयायै नमः
ॐ अजितायै नमः
ॐ अपराजितायै नमः
ॐ नित्यायै नमः
ॐ विलासिन्यै नमः
ॐ दोग्ध्र्यै नमः
ॐ अघोरायै नमः
ॐ मङ्गलायै नमः

चण्डिका आवाहनम् –

© Purnanandalahari.org ©

मातर्मेमधुकैटपघ्नि महिषप्राणापहारोद्यमे
हेला निर्मित धूम्रलोचनवधे हे चण्डमुण्डार्दिनि ।
निश्शेषीकृत रक्तबीजतनुजे नित्येनिशुम्भापहे
शुम्भध्वम्सिनि सम्हराशुदुरितं दुर्गे नमस्तेऽम्बिके ॥

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे । चण्डिकापरमेश्वर्यै नमः – आवाहितो भव । – आवहन मुद्रां प्रदर्शय
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे । चण्डिकापरमेश्वर्यै नमः – स्थापितो भव । – स्थापण मुद्रां प्रदर्शय
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे । चण्डिकापरमेश्वर्यै नमः – संस्थितो भव । – संस्थितो मुद्रां प्रदर्शय
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे । चण्डिकापरमेश्वर्यै नमः – सन्निरुधो भव । – सन्निरुध मुद्रां प्रदर्शय
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे । चण्डिकापरमेश्वर्यै नमः – सम्मुखी भव । – सम्मुखी मुद्रां प्रदर्शय
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे । चण्डिकापरमेश्वर्यै नमः – अवकुण्ठितो भव । – अवकुण्डनमुद्रां प्रदर्शय
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे । श्री चण्डिकापरमेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ – वन्दन देनु योनि मुद्रांश्च प्रदर्शय

यथा शक्ति षोडश उपचार पूजा पञ्चोपचार पूजा वा कुरुत । चतुर्विंशति मुद्रां प्रदर्श्य।
(Do Shodasa upacara puja or panchopacara depending on the time and convenience)

© Purnanandalahari.org ©

षडङ्ग तर्पणम् –

ॐ ह्रां हृदयाय नमः । हृदय शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । शिरो शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ ह्रूं शिखायै वषट् । शिखा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ ह्रैं कवचाय हुं । कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ ह्रः अस्त्राय फट् । अस्त्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

लयाङ्ग तर्पणम् –

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे – श्री चण्डिकापरमेश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (१० वारम्)

© Purnanandalahari.org ©

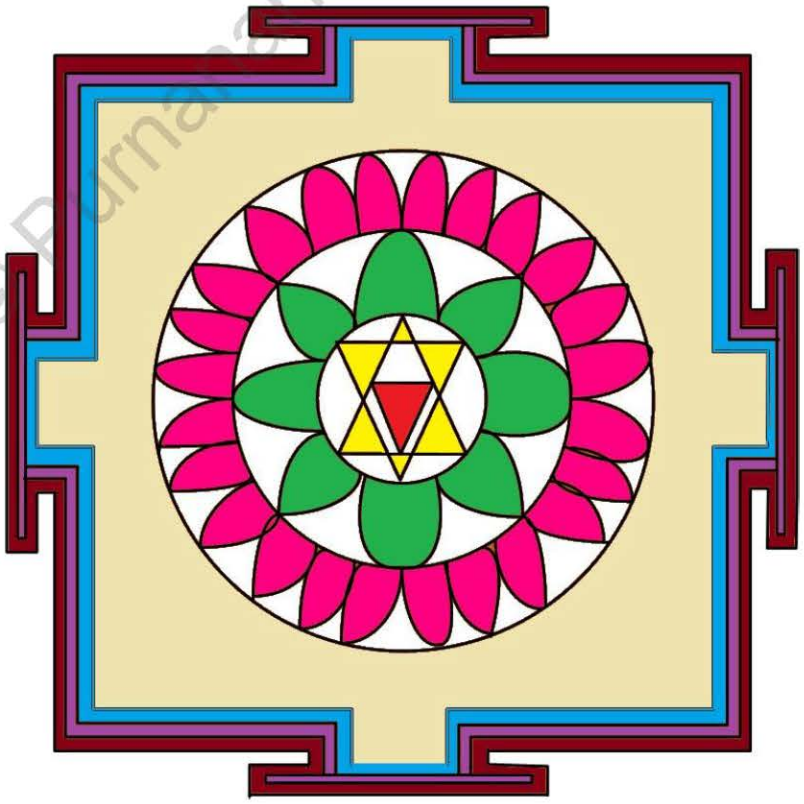

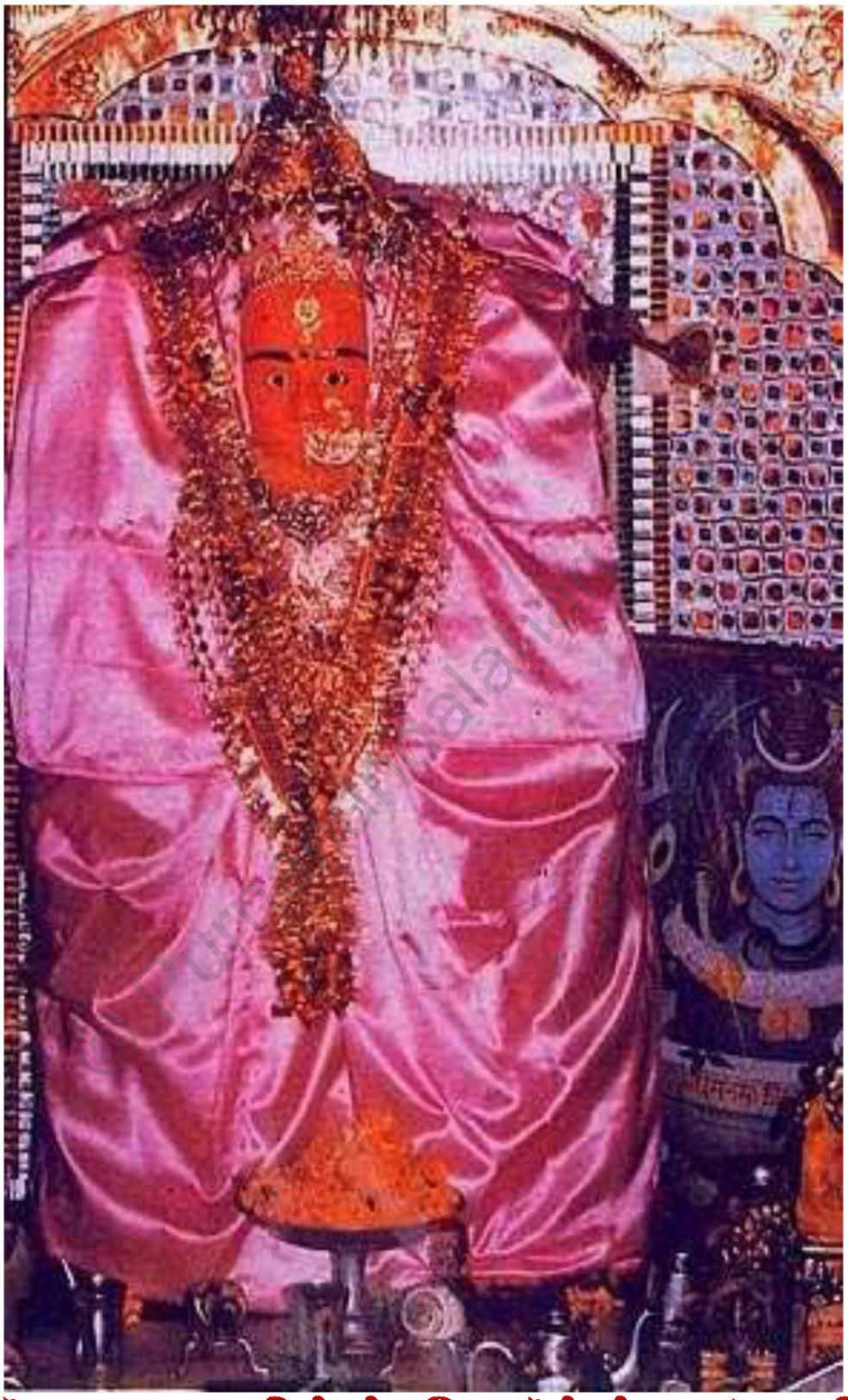

हिमाचले चामुण्डा नगर वासिनी श्री चण्डिका देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः

प्रथमावरणम्
त्रिकोणे

ॐ ह्रां हृदय शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ ह्रीं शिरो शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ ह्रूं शिखा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ ह्रैं कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ ह्रौं नेत्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ ह्रः अस्त्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

एताः प्रथमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे – श्री चण्डिकापरमेश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

अनेन प्रथमावरणार्चनेन श्री चण्डिकापरमेश्वरी प्रीयथाम् ।

द्वितीयावरणम्
मध्यत्रिकोणबहिः

ॐ सरस्वतिब्रह्माभ्यां नमः । सरस्वतीब्रह्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ लक्ष्मिविष्णुभ्यां नमः । लक्ष्मीविष्णु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ गौरिरुद्राभ्यां नमः । गौरीरुद्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

© Purnanandalahari.org ©

ॐ सिं सिंह श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ मं महिष श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ कां काल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ मृं मृत्यु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः द्वितीयावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे – श्री चण्डिकापरमेश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

अनेन द्वितीयावरणार्चनेन श्री चण्डिकापरमेश्वरी प्रीयथाम् ।

तृतीयावरणम्
षट्कोणे

ॐ नं नन्दजा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ रं रक्तदन्तिका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ शां शाकम्भरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ दुं दुर्गा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ भीं भीमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ भ्रां भ्रामरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः तृतीयावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

© Purnanandalahari.org ©

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे – श्री चण्डिकापरमेश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

अनेन तृतीयावरणार्चनेन श्री चण्डिकापरमेश्वरी प्रीयथाम् ।

तुरियावरणम्
अष्टदले

ॐ आं ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ईं नारायणी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऊं माहेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ॠं चामुण्डा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऌं कौमारी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऐं अपराजिता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ औं वाराही श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ अः नारसिंही श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

© Purnanandalahari.org ©

एताः तुरियावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे – श्री चण्डिकापरमेश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (३ वारम्)

अभीष्ठसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तुरीयावरणार्चनम् ॥

अनेन तुरीयावरणार्चनेन श्री चण्डिकापरमेश्वरी प्रीयथाम् ।

पञ्चमावरणम्

अष्टदले

ॐ ह्रीं असुताङ्गभैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं रुरु भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं चण्ड भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं क्रोध भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं उन्मत्त भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं कपाल भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं भीषण भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं संहार भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः पञ्चमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे – श्री चण्डिकापरमेश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (३ वारम्)

अभीष्ठसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

अनेन पञ्चमावरणार्चनेन श्री चण्डिकापरमेश्वरी प्रीयथाम् ।

© Purnanandalahari.org ©

षष्ट्यावरणम्

चतुर्विंशति दले

ॐ विं विष्णुमाया श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ चें चेतना श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ बुं बुद्धि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ निं नित्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ क्षुं क्षुधा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ छां छाया श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ शं शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ तृं तृष्णा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ क्षां क्षान्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ कां कान्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ लं लक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ धृं धृती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ वृं वृत्ती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ श्रुं श्रुति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ स्मृं स्मृती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ तुं तुष्टि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ पुं पुष्टि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ दं दया श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ मां माता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ भ्रां भ्रान्ती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः षष्ट्यावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

© Purnanandalahari.org ©

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे – श्री चण्डिकापरमेश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ट्यावरणार्चनम् ॥

अनेन षष्ट्यावरणार्चनेन श्री चण्डिकापरमेश्वरी प्रीयथाम् ।

सप्तमावरणम्

भूपुरे दशदिक्षु

ॐ लां इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ रां अग्नि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ टां यम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ क्षां निऋति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ वां वरुण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ यां वायु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ सां सोम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ हां ईशान श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ आं ब्रह्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं अनन्त श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः सप्तमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे – श्री चण्डिकापरमेश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (३ वारम्)

© Dumanualahari.org ©

अभीष्ठसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥

अनेन सप्तमावरणार्चनेन श्री चण्डिकापरमेश्वरी प्रीयथाम् ।

अष्टमावरणम्

ॐ वं वज्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ शं शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ दं दण्ड श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ खं खड्ग श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ पं पाश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ध्वं ध्वज श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ गं गद श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ शूं शूल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ पं पद्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ चं चक्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः अष्टमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे – श्री चण्डिकापरमेश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (३ वारम्)

अभीष्ठसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥

अनेन अष्टमावरणार्चनेन श्री चण्डिकापरमेश्वरी प्रीयथाम् ।

© Purnanandalahari.org ©

नवमावरणम्

ॐ ब्रं ब्रह्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ विं विष्णु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ रुं रुद्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ अं अक्षमाला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ पं पद्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ सां सायक श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ खं खड्ग श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ वं वज्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ गं गद श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ चं चक्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ सुं सुराभाजन श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ शं शङ्ख श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ शं शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ पं परशु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ धं धनु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ चं चर्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ दं दण्ड श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ कुं कुण्डिका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ घं घण्टा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ पां पाश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ शूं शूल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ यों योगिणी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ क्षं क्षेत्रपाल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ गं गणेश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ दुं दुर्गा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

© Purnanandalahari.org ©

ॐ विं विष्णु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ शिं शिव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ सुं सूर्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ गं गणपति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः नवमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे – श्री चण्डिकापरमेश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥

अनेन नवमावरणार्चनेन श्री चण्डिकापरमेश्वरी प्रीयथाम् ।

पञ्चपूजा

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्धं कल्पायामि ।
हं आकाशात्मिकायै पुष्पाणि कल्पायामि ।

© Purnanandalahari.org ©

मार्कण्डेय ऋषि आश्रम वासिनी सप्तशृङ्गी देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः

© Purnanand

दुर्गा नवाक्षरी त्रिशती

ॐ ऐं कार .....नमः

ॐ ऐं कार पीठमध्यस्थायै नमः

ॐ ऐं कारासन सुस्थितायै नमः

ॐ ऐं कारजपसन्तुष्टायै नमः

ॐ ऐं कारजपसौख्यदायै नमः

ॐ ऐं कारमोहनपरायै नमः

ॐ ऐं कारभरणोज्वलायै नमः

ॐ ऐं काररूपायै नमः

ॐ ऐं कार्यै नमः

ॐ ऐं कारवरवर्णिन्यै नमः

ॐ ऐं कारकल्पवृक्षस्थायै नमः

ॐ ऐं कारलोचनायै नमः

ॐ ऐं कारवाच्यायै नमः

ॐ ऐं कारपूज्यायै नमः

ॐ ऐं कारपङ्कजायै नमः

ॐ ऐं कारकाननावासायै नमः

ॐ ऐं कारगिरिरूपिण्यै नमः

ॐ ऐं कारकन्दरासिद्ध्यै नमः

३४१

ॐ ऐं काराक्षर शोभितायै नमः

ॐ ऐं काराब्जसमासीनायै नमः

ॐ ऐं कारमुखमण्डलायै नमः

ॐ ऐं कारारण्य हरिण्यै नमः

ॐ ऐं कारामृतवर्षिण्यै नमः

ॐ ऐं कारकमलावासायै नमः

ॐ ऐं कारोद्यान वासिन्यै नमः

ॐ ऐं कारवन्दितपतायै नमः

ॐ ऐं कार वरदायिन्यै नमः

ॐ ऐं कारामृतसन्धातायै नमः

ॐ ऐं कारामृतपायिन्यै नमः

ॐ ऐं कारारण्य सञ्चारायै नमः

ॐ ऐं काराश्रय विराजितायै नमः

ॐ ऐं कारमन्त्रसञ्जप्यायै नमः

ॐ ऐं कारजपसिद्धिदायै नमः

ॐ ऐं कारनन्दनोद्यान
कुसुमोज्वलमूर्धजायै नमः

ॐ ह्रींकार मन्त्रसमवासायै नमः

ॐ ह्रींकारसुमशोभितायै नमः

ॐ ह्रींकाररूपायै नमः

३४२

© Purnanandahari.org ©

ॐ ह्रींकारकार्यायै नमः
ॐ ह्रींकाराम्बुज मध्यगायै
ॐ ह्रींकारपूजन प्रीतायै नमः
ॐ ह्रींकारक्षररूपिण्यै नमः
ॐ ह्रींकारक्षरसञ्जप्यै नमः
ॐ ह्रींकारारण्य वल्लभायै नमः
ॐ ह्रींकारमणिभूषाढ्यायै नमः
ॐ ह्रींकाररामशोभितायै नमः
ॐ ह्रींकारजपसुप्रीतायै नमः
ॐ ह्रींकारकमलोज्वलायै नमः
ॐ ह्रींकारशिखिसम्रूपायै नमः
ॐ ह्रींकारनन्ददायिन्यै नमः
ॐ ह्रींकारगिरिसम्भूतायै नमः
ॐ ह्रींकारगिरिवासिन्यै नमः
ॐ ह्रींकारोड्याणपीठस्थायै नमः
ॐ ह्रींकारवरदायिन्यै नमः
ॐ ह्रींकार रञ्जनपरायै नमः
ॐ ह्रींकारादर्श बिम्बितायै नमः
ॐ ह्रींकारोद्यान संशोभायै नमः
ॐ ह्रींकारारण्य वासिन्यै नमः

३४३

ॐ ह्रींकारविलसद्रूपायै नमः
ॐ ह्रींकारादित्य भास्वरायै नमः
ॐ ह्रींकारेन्दुकलाधरायै नमः
ॐ ह्रींकारशशिमण्डलायै नमः
ॐ ह्रींकारनादरसिकायै नमः
ॐ ह्रींकारस्वादभृङ्गिकायै नमः
ॐ ह्रींकारवापिका हंस्यै नमः
ॐ ह्रींकारलाभकोकिलायै नमः
ॐ ह्रींकारोज्वल सर्वाङ्ग्यै नमः
ॐ ह्रींकार मधुमत्तायै नमः
ॐ क्लींकार मध्यनिलयायै नमः
ॐ क्लींकार हृदयस्थितायै नमः
ॐ क्लींकार बिम्बसंशोभायै नमः
ॐ क्लींकाराह्लाद चन्द्रिकायै नमः
ॐ क्लींकारानन्द सन्धात्र्यै नमः
ॐ क्लींकार मणिमण्टपायै नमः
ॐ क्लींकार पीठमध्यस्थायै नमः
ॐ क्लींकार परसौख्यदायै नमः
ॐ क्लींकार सौधमध्यस्थायै नमः
ॐ क्लींकार तिलकोज्वलायै नमः

३४४

© Purnanandalahari.com ©

ॐ क्लींकार मोदहृदयायै नमः

ॐ क्लींकार विजयप्रदायै नमः

ॐ क्लींकार बीजसर्वस्वायै नमः

ॐ क्लींकार स्थितायै नमः

ॐ क्लींकार निवासिन्यै नमः

ॐ क्लींकाराकारसाधकपरायै नमः

ॐ क्लींकार कलुषापहायै नमः

ॐ ॐ क्लींकार पुष्टिसन्धायै नमः

ॐ क्लींकार कमलासनायै नमः

ॐ क्लींकारपद्मसंवासायै नमः

ॐ क्लींकार मधुपायिन्यै नमः

ॐ क्लींकार चापहस्ताढ्यायै नमः

ॐ क्लींकारेषु सुबाहुकायै नमः

ॐ क्लींकार सुममध्यस्थायै नमः

ॐ क्लींकार सुमशोभितायै नमः

ॐ क्लींकार मधुरालापायै नमः

ॐ क्लींकाराङ्कुश शोभितायै नमः

ॐ क्लींकार पद्म हस्ताढ्यायै नमः

ॐ क्लींकार मधुवापिकायै नमः

ॐ क्लींकार हत दैत्यौघायै नमः

३४५

ॐ क्लींकारोत्पल मालिकायै नमः

ॐ क्लींकारानल सन्दग्ध दुष्टदैत्य समूहितायै नमः

ॐ क्लींकार नन्दनोद्यान मणिमण्टपशोभितायै नमः

ॐ चापबाण लसद्धस्तायै नमः

ॐ चारुचन्द्रकलाधरायै नमः

ॐ चाम्पेय कुसुमप्रीतायै नमः

ॐ चारुनूपुर शोभितायै नमः

ॐ चारुरूपायै नमः

ॐ चारुहासायै नमः

ॐ चराचर निवासिन्यै नमः

ॐ चातुर्वर्ण्य समाराध्यायै नमः

ॐ चारु सुभ्रू सुशोभितायै नमः

ॐ चाम्पेय कुसुमाकार नासादण्ड विराजितायै नमः

ॐ चामरद्वय संवीज्य लक्ष्मी वाणी सुशोभितायै नमः

ॐ चारुदन्तायै नमः

ॐ चारु जिह्वायै नमः

३४६

© Purnananda Sahai.org ©

ॐ चारुकुण्डल शोभितायै नमः

ॐ चारु देहायै नमः

ॐ चारु घण्टायै नमः

ॐ चारुहस्तायै नमः

ॐ चतुर्भुजायै नमः

ॐ चारुपादायै नमः

ॐ चारुजङ्घायै नमः

ॐ चारुवक्षोजयुग्मायै नमः

ॐ चारुवक्षायै नमः

ॐ चारुनासायै नमः

ॐ चारुजघनोज्वलायै नमः

ॐ चारु पृष्ठायै नमः

ॐ चारु कट्यै नमः

ॐ चारुपार्श्वद्वयोज्वलायै नमः

ॐ चारुनेत्रायै नमः

ॐ चारु कर्णायै नमः

ॐ चारुनेत्रललाटिकायै नमः

ॐ चारुकेश्यै नमः

ॐ चारुमूर्त्यै नमः

ॐ चारुसर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः

३४७

ॐ मुण्डसेनामहासङ्गनादविमोहितायै नमः

ॐ मुण्डसेना महावेगगर्जन स्तम्भकारिण्यै नमः

ॐ मुण्डसेना पती सङ्गज्याशब्दपरिमोहितायै नमः

ॐ मुण्डसेनापतीव्रात विनाशन समुत्सुकायै नमः

ॐ मुण्डासुर चमूसङ्घघण्टाजयघोष मूर्च्छितायै नमः

ॐ मुण्डजल्प वशोत्साह दैत्य सैन्य समुत्सुकायै नमः

ॐ मुण्डासुरवधोद्युक्तखड्गहस्त सुशोभितायै नमः

ॐ मुण्डासुर महायुद्ध समस्तम्भित महासुरायै नमः

ॐ मुण्डदूषित शक्त्यौघ दैत्यसङ्गविदारितायै नमः

ॐ मुण्डगोप प्रज्वलित भीतदेव समुत्सुकायै नमः

ॐ मुण्डासुर महायुद्ध देववाद्य रुघोषितायै नमः

ॐ मुण्डासुर वधोत्साह देवदुन्दुभि घोषितायै नमः

© Punnanadalanai.org ©

ॐ मुण्डासुर महायुद्ध पटहानद्ध दैत्यगायै नमः

ॐ मुण्डासुरशिरोगृह्य खड्गपात निकृन्तन्यै नमः

ॐ मुण्डासुरशिरोहस्त कन्दुक क्रीडनोत्सुकायै नमः

ॐ मुण्डासुरशिरोहस्त सन्तुष्ट सुरसैनिकायै नमः

ॐ मुण्डासुर हतप्राप्त दैत्य सङ्गप्ररोचिन्यै नमः

ॐ मुण्डासुर शिरोहस्त विभ्रामित दिगम्बरायै नमः

ॐ मुण्डासुर शिरोहस्त दैत्यसङ्गविभीषितायै नमः

ॐ मुण्डासुर शिरस्राव रक्त वस्त्र समुज्वलायै नमः

ॐ मुण्ड मुण्ड सुलन्दृष्ट दैत्यसैन्य पलायितायै नमः

ॐ मुण्डमाला लसत्कण्ठ लम्बजिह्वा सुनर्तन्यै नमः

ॐ मुण्डवस्त्रपरीधान सुशोभित शरीरिण्यै नमः

ॐ मुण्डदैत्य वधोत्साह मुनिसङ्ग समुत्सुकायै नमः

ॐ मुण्डदैत्य वधोत्साह देवसंस्तुत वैभवायै नमः

ॐ मुण्डदैत्य शिरच्छेत्र्यै नमः

ॐ मुण्डिन्यै नमः

ॐ मुण्डरूपिण्यै नमः

ॐ मुण्ड्यै नमः

ॐ मुण्डमथन्यै नमः

ॐ मुण्डोज्वल सुशोभितायै नमः

ॐ मुण्डासुर वधोत्पन्न देवर्षिगण तोषितायै नमः

ॐ डमरोत्कट सन्नादायै नमः

ॐ डाकिनी गणसेवितायै नमः

ॐ डमर्वङ्कुश हस्ताड्यायै नमः

ॐ डाकिनी गण पूजितायै नमः

ॐ डम्बमुक्तजनोत्साहायै नमः

ॐ डम्बयुक्तविगर्हितायै नमः

ॐ दाडिमीसुमसङ्काशायै नमः

ॐ दाडिमीफलसुप्रियायै नमः

ॐ डकार शोभित मनवे नमः

ॐ डम्बिकायै नमः

© Purnanandalahari.org ©

ॐ डमरोत्सुकायै नमः

ॐ डमायै नमः

ॐ डम्बरहितायै नमः

ॐ डम्बाडम्बसमुत्सुकायै नमः

ॐ डमरुवाद्य सुसम्प्रीत्यै नमः

ॐ डमरुहस्त सखीजनायै नमः

ॐ डमरोत्कटसन्नादायै नमः

ॐ डमरुध्वनि संस्तम्भित दैत्य सङ्घविराजितायै नमः

ॐ डकार विलसन्मन्त्रायै नमः

ॐ डकार परमार्थदायै नमः

ॐ डकार मन्त्रसर्वस्वायै नमः

ॐ डकार हतकिल्बिषायै नमः

ॐ डकार हत दैत्यौघायै नमः

ॐ डकार गिरि सुप्रियायै नमः

ॐ डकाराक्षरसुप्रीतायै नमः

ॐ डकारमोददायिन्यै नमः

ॐ डम्बासुर सुसमहर्त्र्यै नमः

ॐ डम्बाडम्ब विवर्जितायै नमः

ॐ डकारहतपापौघायै नमः

३५१

ॐ डकारपरसौख्यदायै नमः

ॐ डकारपूजनप्रीतायै नमः

ॐ डकारोज्ज्वल मध्यगायै नमः

ॐ यैकाराक्षरसम्पूज्यायै नमः

ॐ यैकाराक्षर शोभितायै नमः

ॐ यैकार शोभितमनसे नमः

ॐ यैकार तरुवासिन्यै नमः

ॐ यैकार गिरिसंवासायै नमः

ॐ यैकार गुहसंस्थितायै नमः

ॐ यैकार सिह्मसंवाहायै नमः

ॐ यैकाराक्षर सुस्थितायै नमः

ॐ यैकाराक्षर सुप्रीतायै नमः

ॐ यैकार मनु मध्यगायै नमः

ॐ यैकारमनु मध्यस्थायै नमः

ॐ यैकाराक्षर सुप्रियायै नमः

ॐ यैकारविलसन्मन्त्रायै नमः

ॐ यैकाराक्षर भासुरायै नमः

ॐ यैकार गजसंरूढायै नमः

ॐ यैकार तुरगोज्ज्वलायै नमः

ॐ यैकार विलसद्योगायै नमः

३५२

©Purnanandalahari.org©

ॐ यैकार ह्लादकारिण्यै नमः

ॐ यैकार रथसंरूढायै नमः

ॐ यैकार सुखसुप्तिकायै नमः

ॐ यैकाराक्षर रूपिण्यै नमः

ॐ यैकार परमानन्दायै नमः

ॐ यैकारपरमाक्षरायै नमः

ॐ यैकारानन्द हृदयायै नमः

ॐ यैकारपरसौख्यदायै नमः

ॐ यैकार सुखसंसुप्तायै नमः

ॐ यैकारायै नमः

ॐ यैकरूपिण्यै नमः

ॐ यैकारज्ञान सम्पन्नायै नमः

ॐ यैकार पररूपिण्यै नमः

ॐ यैकारसम्पदापत्यै नमः

ॐ यैकार फलदायिन्यै नमः

ॐ विज्ञानजन सन्तुष्टायै नमः

ॐ विज्ञानजन पूजितायै नमः

ॐ विज्ञानजन सुप्रीतायै नमः

ॐ विज्ञानजन सौख्यदायै नमः

ॐ विज्ञान परमानन्दायै नमः

३५३

ॐ विज्ञान जनतोषिण्यै नमः

ॐ विज्ञानानन्द सुहितायै नमः

ॐ विज्ञानतत्वसन्दर्शायै नमः

ॐ विज्ञानानन्दरूपिण्यै नमः

ॐ विज्ञानज्ञानसन्धात्र्यै नमः

ॐ विज्ञानसुखदायिन्यै नमः

ॐ विज्ञानार्थविवादज्ञ कारणानन्द विग्रहायै नमः

ॐ विज्ञान तत्व वादार्थ जन सन्देह नाशिन्यै नमः

ॐ विज्ञानज्ञान विदितायै नमः

ॐ विज्ञानारण्यवासिन्यै नमः

ॐ विज्ञानासव सुप्रीतायै नमः

ॐ विज्ञानमधुपायिन्यै नमः

ॐ विज्ञानामृत संवासायै नमः

ॐ विज्ञानामृतपायिन्यै नमः

ॐ विज्ञानाब्धि समाह्लादायै नमः

ॐ विज्ञानाब्धि चन्द्रमसे नमः

ॐ विज्ञानमदिरावासायै नमः

ॐ विज्ञान मधुभृङ्गिकायै नमः

३५४

© Purnananda Lahari.org ©

ॐ विज्ञानरथसंरूढायै नमः

ॐ विज्ञान तुरगोज्ज्वलायै नमः

ॐ विज्ञानहृदयानन्द सत्स्वरूप प्रदर्शिन्यै नमः

ॐ विज्ञानानन्द संयोग प्रबोधन पटीयस्यै नमः

ॐ विज्ञानमण्टपान्तस्थ सुपूजित पदद्वयायै नमः

ॐ चेतनायै नमः

ॐ चेतनारूपायै नमः

ॐ चेतनारूपधारिण्यै नमः

ॐ केकाराक्षर संपूज्यायै नमः

ॐ चेकाराक्षर मूर्धजायै नमः

ॐ चेकार शोभितमनवे नमः

ॐ चेकाराक्षर शोभितायै नमः

ॐ चेकार सिद्धनिर्माल्यायै नमः

ॐ चेकाराक्षर सौख्यदायै नमः

ॐ चेकिताशेष भुवनायै नमः

ॐ चेकारानन्द दायिन्यै नमः

ॐ चेरदेश कृतावासायै नमः

ॐ चेरदेश सुरक्षितायै नमः

ॐ चेकार रक्ष संशोभायै नमः

ॐ चेरेश्वर सुरक्षितायै नमः

ॐ चेकार वाच्य सन्तुष्टायै नमः

ॐ चेकारान्त्य सुशोभितायै नमः

ॐ चेकाराक्षर सञ्जप्यायै नमः

ॐ चेकाराक्षर संयुतायै नमः

ॐ चेकाराक्षर मन्त्राद्य जप सन्तोष दायिन्यै नमः

ॐ चेदिराज्य कृतद्वेषायै नमः

ॐ चेदिराजावमानितायै नमः

ॐ चेदिराज संहन्त्र्यै नमः

ॐ चेदिराज भयप्रदायै नमः

ॐ चेदिराज समुन्मूल नाशनोत्सुख विग्रहायै नमः

ॐ चेदिराज प्रमोत्पन्न समुत्सुक विराजितायै नमः

ॐ चेदिराज वधोत्साहायै नमः

ॐ चेदिराज वधप्रियायै नमः

ॐ चेदिराज शिरोहन्त्र्यै नमः

ॐ चेदिजन सुरक्षितायै नमः

© Purnanandalahari.org ©

ॐ चेतनाचेतन प्रीतायै नमः

ॐ चेतनोज्ज्वल रूपिण्यै नमः

ॐ चेरचोळादि देशस्थ चारचोर विनाशिन्यै नमः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शोभायै नमः

ॐ चामुण्डायै सुपूजितायै नमः

ॐ विच्छे विशेष तत्वार्थ ज्ञानज्ञेय स्वरूपिण्यै नमः

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः

ॐ श्रीदुर्गापरमेश्वर्यै नमः

३५७

यं वाय्वात्मिकायै धूपं कल्पायामि ।
रं अग्न्यात्मिकायै दीपं कल्पायामि ।
वं अमृतात्मिकायैअमृतं कल्पायामि ।
सं सर्वात्मिकायै ताम्बूलादि समस्त राजोपचारान् कल्पायामि ।

© Purnanandalahari.org ©

श्री चण्डी षष्ट्युत्तर त्रिशत्यर्चनम्

ॐ श्रीनित्यायै नमः
ॐ जगन्मूर्तये नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ भगवत्यै नमः
ॐ महामायायै नमः
ॐ प्रसन्नायै नमः
ॐ वरदायै नमः
ॐ मुक्तिदायिन्यै नमः
ॐ परमायै नमः
ॐ हेतुभूतायै नमः
ॐ सनातन्यै नमः
ॐ संसारबन्धहेतवे नमः
ॐ सर्वेश्यै नमः
ॐ ईश्वर्यै नमः
ॐ योगनिद्रायै नमः
ॐ हरिनेत्रकृतालयायै नमः
ॐ विश्वेश्वर्यै नमः
ॐ जगद्धात्र्यै नमः
ॐ स्थितिकारिण्यै नमः
ॐ संहारकारिण्यै नमः
ॐ श्रीनिद्रायै नमः
ॐ भगवत्यै नमः
ॐ अतुलायै नमः
ॐ तेजसां निधये नमः
ॐ स्वाहायै नमः
ॐ स्वधायै नमः
ॐ वषट्कारायै नमः
ॐ स्वरात्मिकायै नमः
ॐ सुधायै नमः
ॐ अक्षरायै नमः
ॐ त्रिधामात्रात्मिकायै नमः
ॐ अर्धमात्रात्मिकायै नमः
ॐ स्वररूपिण्यै नमः
ॐ अनुच्चार्यायै नमः
ॐ सन्ध्यायै नमः
ॐ सावित्र्यै नमः
ॐ जनन्यै नमः
ॐ परायै नमः
ॐ सृष्टिरूपायै नमः
ॐ जगद्योनये नमः40
(द्वितीयायां- षोडशदळे- विमर्शानन्दनाथवासरे)
ॐ श्रीस्थितिरूपायै नमः
ॐ संहृतिरूपायै नमः
ॐ जगन्मयायै नमः
ॐ महाविद्यायै नमः
ॐ महामायायै नमः
ॐ महामेधायै नमः
ॐ महामोहायै नमः
ॐ भवत्यै नमः
ॐ महादेव्यै नमः
ॐ महासुर्यै नमः
ॐ प्रकृत्यै नमः
ॐ सत्वादिगुणत्रयविभाविन्यै नमः
ॐ कालरात्र्यै नमः
ॐ महारात्र्यै नमः
ॐ मोहरात्र्यै नमः
ॐ दारुणायै नमः
ॐ सुरेश्वर्यै नमः
ॐ ह्रिये नमः
ॐ बुद्ध्यै नमः
ॐ श्रीविद्यायै नमः
ॐ सुलक्षणायै नमः
ॐ लज्जायै नमः
ॐ पुष्ट्यै नमः
ॐ तुष्ट्यै नमः
ॐ शान्त्यै नमः
ॐ क्षान्त्यै नमः
ॐ खड्गिन्यै नमः
ॐ शूलिन्यै नमः
ॐ घोरायै नमः
ॐ गदिन्यै नमः
ॐ चक्रिण्यै नमः

© Purnamanaharari.org ©

ॐ शङ्खिन्यै नमः
ॐ चापिन्यै नमः
ॐ बाणायै नमः
ॐ भुशुण्ड्यै नमः
ॐ परिघायुधायै नमः
ॐ सौम्ययै नमः
ॐ सुन्दर्यै नमः
(तृतीयायां- अष्टदळे- आनन्दानन्दनाथवासरे)
ॐ श्रीपरायै नमः
ॐ परमेश्वर्यै नमः
ॐ परमायै नमः
ॐ सदात्मिकायै नमः
ॐ असदात्मिकायै नमः
ॐ सदसदात्मिकायै नमः
ॐ अखिलात्मिकायै नमः
ॐ नार्यै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ सिंहवाहिन्यै नमः
ॐ अम्बिकायै नमः
ॐ श्रीभद्रकालिकायै नमः
ॐ चण्डिकायै नमः
ॐ जगन्मात्रे नमः
ॐ महिषासुरघातिन्यै नमः
ॐ आत्मशक्तये नमः
ॐ सर्वानन्दमय्यै नमः
ॐ श्रद्धायै नमः
ॐ गुणात्मिकायै नमः
ॐ सर्वाश्रयायै नमः
ॐ शब्दात्मिकायै नमः
ॐ वार्तायै नमः
ॐ आर्तिहन्त्र्यै नमः
ॐ मेधायै नमः
ॐ दुर्गायै नमः
ॐ भवसमुद्रनवे नमः
ॐ कैटाभारि हृदयैक कृतालयायै नमः

ॐ गौर्यै नमः
ॐ सदार्द्रचित्तायै नमः
ॐ गीर्वाणवरदायिन्यै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ महादेव्यै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ भद्रायै नमः
ॐ रौद्र्यै नमः
ॐ धात्र्यै नमः
ॐ ज्योत्स्नायै नमः
(चतुर्थ्यां- चतुर्दशारे- ज्ञानानन्दनाथवासरे)
ॐ श्री इन्दुरूपिण्यै नमः
ॐ सुखायै नमः
ॐ कल्याण्यै नमः
ॐ ऋद्ध्यै नमः
ॐ सिद्ध्यै नमः
ॐ कुर्मिकायै नमः
ॐ नैऋत्यै नमः
ॐ भूभृतां लक्ष्म्यै नमः
ॐ शर्वाण्यै नमः
ॐ दुर्गायै नमः
ॐ दुर्गपारायै नमः
ॐ सारायै नमः
ॐ सर्वकारिण्यै नमः
ॐ क्षान्त्यै नमः
ॐ कृत्स्नायै नमः
ॐ धूम्रायै नमः
ॐ अतिसौम्यायै नमः
ॐ अतिरौद्रायै नमः
ॐ जगत्प्रतिष्ठायै नमः
ॐ कृष्णायै नमः
ॐ श्रीविष्णुमायायै नमः
ॐ चेतनायै नमः
ॐ बुद्धिरूपायै नमः
ॐ निद्रारूपायै नमः
ॐ क्षुधारूपायै नमः
ॐ छायारूपायै नमः

© Purnanandalahari.org ©

ॐ शक्तिरूपायै नमः
ॐ तृष्णारूपायै नमः
ॐ क्षान्तिरूपायै नमः
ॐ जातिरूपायै नमः
ॐ लज्जारूपायै नमः
ॐ शान्तिरूपायै नमः
ॐ श्रद्धारूपायै नमः
ॐ कान्तिरूपायै नमः
ॐ लक्ष्मीरूपायै नमः
ॐ वृत्तिरूपायै नमः
ॐ धृतिरूपायै नमः
ॐ स्मृतिरूपायै नमः
ॐ दयारूपायै नमः
ॐ तुष्टिरूपायै नमः
(पञ्चम्यां - बहिर्दशारे- सत्यानन्दनाथवासरे)
ॐ श्रीपुष्टिरूपायै नमः
ॐ मातृरूपायै नमः
ॐ भ्रान्तिरूपायै नमः
ॐ शुभहेतवे नमः
ॐ पार्वत्यै नमः
ॐ कौशिक्यै नमः
ॐ कालिकायै नमः
ॐ उग्रचण्डायै नमः
ॐ कृष्णायै नमः
ॐ हिमाचलकृतालयायै नमः
ॐ धूम्रलोचनहन्त्र्यै नमः
ॐ असिन्यै नमः
ॐ पाशिन्यै नमः
ॐ विचित्रखट्वाङ्गधरायै नमः
ॐ नरमालाविभूषणायै नमः
ॐ द्वीपिचर्मपरीधानायै नमः
ॐ शुष्कमांसायै नमः
ॐ अतिभैरवायै नमः
ॐ अतिविस्तारवदनायै नमः
ॐ जिह्वाललनभीषणायै नमः
ॐ श्रीनिमग्नायै नमः
ॐ आरक्तनयनायै नमः
ॐ नादापूरितदिङ्मुखायै नमः
ॐ भीमाक्ष्यै नमः
ॐ भीमरूपायै नमः
ॐ चण्डविनाशिन्यै नमः
ॐ मुण्डविनाशिन्यै नमः
ॐ चामुण्डायै नमः
ॐ लोकविख्यातायै नमः
ॐ ब्रह्माण्यै नमः
ॐ ब्रह्मवादिन्यै नमः
ॐ माहेश्वर्यै नमः
ॐ वृषारूढायै नमः
ॐ त्रिशूलधारिण्यै नमः
ॐ वरधारिण्यै नमः
ॐ महाबलायै नमः
ॐ अहिबलायै नमः
ॐ चन्द्ररेखाविभूषितायै नमः
ॐ कौमार्यै नमः
ॐ शक्तिहस्तायै नमः
(षष्ठ्यां - अन्तर्दशारे- पूर्णानन्दनाथवासरे)
ॐ श्रीमयूरवाहनायै नमः
ॐ गुहरूपायै नमः
ॐ वैष्णव्यै नमः
ॐ गरुडोपरिस्थितायै नमः
ॐ शङ्खहस्तायै नमः
ॐ चक्रहस्तायै नमः
ॐ गदाहस्तायै नमः
ॐ शार्ङ्गहस्तायै नमः
ॐ खड्गहस्तायै नमः
ॐ वाराह्यै नमः
ॐ श्रीनारसिंह्यै नमः
ॐ घोररावायै नमः
ॐ सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहत्यै नमः
ॐ वज्रहस्तायै नमः
ॐ ऐन्द्र्यै नमः
ॐ गजराजोपरिस्थितायै नमः
ॐ सहस्रनयनायै नमः
ॐ शक्रहस्तायै नमः

© Purnanandalahari.org ©

ॐ भीषणायै नमः
ॐ श्रीशक्तये नमः
ॐ अत्युग्रायै नमः
ॐ शिवाशतनिनादिन्यै नमः
ॐ अपराजितायै नमः
ॐ शिवदूत्यै नमः
ॐ कात्यायन्यै नमः
ॐ रक्तबीजनाशिन्यै नमः
ॐ चन्द्रघण्टिकायै नमः
ॐ अष्टादशभुजायै नमः
ॐ उग्रायै नमः
ॐ निशुम्भासुरघातिन्यै नमः
ॐ शुम्भहन्त्र्यै नमः
ॐ प्रपन्नार्तिहरायै नमः
ॐ विश्वेश्वर्यै नमः
ॐ आधारभूतायै नमः
ॐ महीरूपायै नमः
ॐ अपां रूपायै नमः
ॐ आप्यायिन्यै नमः
ॐ अलङ्घ्यवीर्यायै नमः
ॐ अनन्तबीजायै नमः
(सप्तम्यां - अष्टारे- स्वभावानन्दनाथवासरे)
ॐ श्रीबीजस्वरूपिण्यै नमः
ॐ सम्मोहिन्यै नमः
ॐ विद्यायै नमः
ॐ स्वर्गप्रदायिन्यै नमः
ॐ मुक्तिप्रदायिन्यै नमः
ॐ अशेषजनहृत्संस्थायै नमः
ॐ नारायण्यै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ कलाकाष्ठादिरूपायै नमः
ॐ परिणामप्रदायिन्यै नमः
ॐ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यायै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ सर्वार्थसाधिकायै नमः
ॐ शरण्यायै नमः
ॐ त्र्यम्बकायै नमः
ॐ गौर्यै नमः
ॐ सृष्ट्यात्मिकायै नमः
ॐ स्थित्यात्मिकायै नमः
ॐ लयात्मिकायै नमः
ॐ शक्त्यै नमः
ॐ श्रीसनातन्यै नमः
ॐ गुणाश्रयायै नमः
ॐ गुणमयायै नमः
ॐ नारायणस्वरूपिण्यै नमः
ॐ शरणागत-परित्राण-परायणायै नमः
ॐ दीन-परित्राण-परायणायै नमः
ॐ आर्त-परित्राण-परायणायै नमः
ॐ सर्वस्यार्तिहर्यै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ विष्णुरूपायै नमः
ॐ परात्परायै नमः
ॐ हंसयुक्तविमानस्थायै नमः
ॐ ब्रह्माणीरूपधारिण्यै नमः
ॐ कौशाम्भोधारिण्यै नमः
ॐ क्षुरिकाधारिण्यै नमः
ॐ शूलधारिण्यै नमः
ॐ चन्द्रधारिण्यै नमः
ॐ अहिधारिण्यै नमः
ॐ वरधारिण्यै नमः
ॐ महावृषभसंरूढायै नमः
(अष्टम्यां - त्रिकोणे- प्रतिभानन्दनाथवासरे)
ॐ श्रीमहेश्वर्यै नमः
ॐ त्रैलोक्यत्राणसहितायै नमः
ॐ किरीटवरधारिण्यै नमः
ॐ शिवदूतीस्वरूपिण्यै नमः
ॐ हतदैत्यायै नमः
ॐ वृत्रप्राणहरणायै नमः
ॐ महासत्वायै नमः
ॐ घोररूपायै नमः
ॐ महारवायै नमः
ॐ दंष्ट्राकराळवदनायै नमः
ॐ शिरोमालाभूषणायै नमः

© Purnanandalahari.org ©

ॐ चामुण्डायै नमः
ॐ मुण्डमथन्यै नमः
ॐ लक्ष्म्यै नमः
ॐ लज्जायै नमः
ॐ महाविद्यायै नमः
ॐ श्रद्धायै नमः
ॐ पुष्ट्यै नमः
ॐ सदाध्रुवायै नमः
ॐ महारात्र्यै नमः
ॐ श्रीमहाविद्यायै नमः
ॐ महामेधायै नमः
ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ वरायै नमः
ॐ भीतिदायै नमः
ॐ तामस्यै नमः
ॐ नियतेशायै नमः
ॐ सर्वतः पाण्यन्तायै नमः
ॐ सर्वतः पादान्तायै नमः
ॐ सर्वतोऽक्ष्यन्तायै नमः
ॐ सर्वतः शिरोऽन्तायै नमः
ॐ सर्वतोमुखान्तायै नमः
ॐ सर्वतोघ्राणान्तायै नमः
ॐ सर्वस्वरूपिण्यै नमः
ॐ सर्वेशायै नमः
ॐ सर्वरूपायै नमः
ॐ सर्वशक्तिसमन्वितायै नमः
ॐ समस्तरोगहन्त्र्यै नमः
ॐ समस्ताभीष्टदायिन्यै नमः
(नवम्यां - बिन्दौ- सुभागानन्दनाथवासरे)
ॐ श्रीविश्वात्मिकायै नमः
ॐ पापहारिण्यै नमः
ॐ उत्पातपाकजनितोपसर्गचयनाशिन्यै नमः
ॐ विश्वार्तिहारिण्यै नमः
ॐ त्रैलोक्यवरदायिन्यै नमः
ॐ नन्दगोपगृहेजातायै नमः
ॐ यशोदागर्भसम्भवायै नमः
ॐ विन्ध्याद्रिवासिन्यै नमः
ॐ रौद्ररूपिण्यै नमः
ॐ श्रीरक्तदन्तिकायै नमः
ॐ दाडिमीकुसुमप्रख्यायै नमः
ॐ अयोनिजायै नमः
ॐ शतलोचनायै नमः
ॐ भीमायै नमः
ॐ शाकम्भर्यै नमः
ॐ दुर्गायै नमः
ॐ दानवेन्द्रविनाशिन्यै नमः
ॐ महाकाल्यायै नमः
ॐ महाकाल्यै नमः
ॐ श्रीमहामायै नमः
ॐ अजायै नमः
ॐ लक्ष्मीप्रदायै नमः
ॐ वृद्धिप्रदायै नमः
ॐ नित्यायै नमः
ॐ पुत्रपौत्रवर्धिन्यै नमः
ॐ शैलपुत्र्यै नमः
ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः
ॐ चन्द्रघण्टायै नमः
ॐ विशालाक्ष्यै नमः
ॐ श्रीकूष्माण्डायै नमः
ॐ वेदमातृकायै नमः
ॐ स्कन्दमात्रे नमः
ॐ गणेश्यै नमः
ॐ विरूपाक्ष्यै नमः
ॐ अम्बिकायै नमः
ॐ महागौर्यै नमः
ॐ महावीर्यायै नमः
ॐ महाबलायै नमः
ॐ महापराक्रमायै नमः

© Purnanandalahari.org ©

(दशम्यां - बिन्दौ - समष्टि पूजनं)

सङ्कल्पे विशेषः
सहस्त्र-फणामणि-मण्डल-मण्डितस्य शेष-पर्यङ्क-शयानस्य भगवतः श्रीमन्नारायणास्य सृष्ट्यादौ नाभि कमलादाविर्भूतस्य ब्रह्मणः संरक्षणार्थं विष्णुकर्णमलोदभूतयोः मधुकैटभयोः निग्रहार्थं ब्रह्मणा संप्रार्थितायाः विष्णोः नेत्र आस्य नासिका बाहु हृदयेभ्यः उरसश्च आविभूतायाः दशवक्त्रायाः दशभुजायाः दशपादायाः नीलमणिद्युतेः रूप सौभाग्यकान्तीनां परम प्रतिष्ठायाः श्रीमहाकाल्याः - स सैन्य सहित महिषासुर निग्रहार्थं सर्व देव शरीरेभ्यो ज्योतिरूपेण आविर्भूतायाः अष्टादशभुजायाः प्रवाळवर्णायाः कमलासनस्थायाः त्रिगुणात्मिकायाः महिषमर्दिन्याः श्रीमहालक्ष्म्याः - स सैन्य सहित शुम्भ निशुम्भ धूम्रलोचन चण्ड मुण्ड रक्तबीजादि निग्रहार्थं गौरी देहात् समुद्भूतायाः ब्राह्म्यादि शक्ति सहितायाः स्फटिकवर्णायाः अष्टभुजायाः सर्वज्ञत्वप्रदायाः श्रीमहासरस्वत्याः लोक संरक्षणार्थं नन्दा रक्तदन्तिका शाकम्भरी भीमा दुर्गा भ्रामरी रूपेण कृतावतारायाः एतासां समष्टिरूपेण विरजन्त्याः श्रीचण्डिकापरमेश्वर्याः 'एभिस्स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः मानवः तस्याहं सकलां बाधां शम्यिष्याम्यसंशयं' इति श्री देव्योक्त प्राकारेण स्तोतृणां सकलबाधा निवृत्तिप्रदायाः 'यत्रैतत्पठ्यते सम्यक् नित्यमायतने मम। सदा न तत् विमोक्ष्यामि सान्निध्यं तत्र मे स्थितं'च' सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारणं' इति च श्री देव्योक्त प्राकारेण उपासकानां गेहे नित्यं सान्निहितायाः 'श्रुतं हरति पापानि तथारोग्यं प्रयच्छति' इति श्रीदेव्योक्त प्राकारेण सकृत् श्रवणादेव सकल पापहर पूर्वक सकल आरोग्य प्रदायाः 'सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा।स्मरन् ममैतच्चरितं नरो मुच्यते सङ्कटात्' इति श्रीदेव्या दत्त वरप्रदाने स्मरणादेव सकल शत्रुबाधा निवृत्तिप्रदायाः 'श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभा'; इति श्रीदेव्योक्तरीत्या सर्वसम्पत्प्रद विचित्र पवित्र चरित्र वैभवायाः 'उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुदभवान्।तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम; इति श्रीदेव्योक्त प्राकारेण महामार्यादि रोगणां स्मरणादेव शान्तिप्रदायाः परदेवतायाः श्रीजगन्मातुः प्रसादसिद्ध्यर्थं श्री जगन्मातुः प्रसादात् आसेतु हिमाचल निवसतां आस्तिक महाजनानां आबाल वृद्धानां द्विपदां चतुष्पदां च क्षेमवाप्त्यर्थं पुत्र पशु विद्या ऐश्वर्य धन धान्य गृह आराम क्षेत्रादि अभिवृद्ध्यर्थां श्रीपरदेवतायाः परम प्रीतिकर शापोद्धार उत्कीलन मन्त्र जप -कवच अर्गल कीलक- नवाक्षरमन्त्र जप रात्रीसूक्त पठन पूर्वक मार्कण्डेयपुराणन्तर्गत सावर्णिमन्वान्तरे त्रयोदशाध्यायात्मक सप्तशतमन्त्ररूप चण्डिकाख्य पठनं तदन्तरं देवीसूक्त नवाक्षरमन्त्रजप रहस्यत्रय उत्कीलन मन्त्र जपं करिष्ये।।

(**NOTE**: This is a vishESHa saMkalpA and unique in nature that addresses a lot of shanti and so intrinsic that wishes to grant well-beings for a sAdhakA)

© Purandaradasa.org ©

चण्डिका हृदयम्

ॐ ह्रीं जय चामुण्डे इति त्रिदशकोटिनिघृष्टचरणारविन्दे गायत्रि सावित्रि सरस्वति महासन्ध्या महाकृताभरणा भैरवरूपिणि धारणे प्रकटितदर्शने घोरे घोरासने ज्वलज्ज्वाला–सहस्र–परिवृते ऊर्ध्व–मध्य–वसुधाते उदारित–व्रतसन्धे निर्मिते परे परापरे कम्पित–चराचरे षट्चक्र–शोभिते महाशून्ये सुगन्धे अध–ऊर्ध्व–मध्यस्थिते भुक्तिप्रदे देवि निर्मले सकले सकल ऋक्–यजुः–साम–परिपठिते एहि एहि भगवति एन्द्रस्थे सूक्ष्मे सूक्ष्मात्परे फेत्कारावस्थिते भञ्जिनी–स्तम्भिनी–मोहिनी–क्षोभिणी–जृम्भिणी पञ्च–बीज–मध्यस्थिते क्षेत्रे उपक्षेत्रे अष्टदल=प्रकृति–योगि–योगरते यक्ष–राक्षस–ज्वर–महाग्रह–विषोपविष–सिद्ध–गन्धर्व–विद्याधराधिपते ॥ ॐ ह्रींकार–क्रूंकार–हस्ते ॥ ॐ आं ह्रीं अमुकपात्रे प्रवेशय प्रवेशय ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री त्रिपुरे त्रिशक्ति आद्यमूर्तिं आगच्छ वामकरे पवित्राङ्गुलिसिञ्चनं कारयेत् ॥ अमृतसिञ्चनं पूर्णं कारयेत् ॥ सुगन्ध–पुष्प–धूप–दीप–नैवेद्य–फल–ताम्बूल–दक्षिणा–सर्व–हंसमात्रेण कारयेत् ॥ मधु–कुङ्कुम–कस्तूरी–रक्त–चन्दन–रक्त–करवीर–पुष्पैः अतः परं शत–पत्रास्यानीतैर्–नानाविधपुष्पैरेक–चित्तमानसं कुर्वेस्तूष्णीं पूजां कुर्यात् ॥

ॐ द्रां द्रीं द्रावय द्रावय ॥
ॐ क्लीं क्लीं क्लावय क्लावय ॥
ॐ म्लीं म्लीं म्लावय म्लावय ॥
ॐ खं खं शोधय शोधय ॥
ॐ मूं मूं उन्मादय उन्मादय ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं आवेशय आवेशय ॥
ॐ म्रीं म्रीं मूर्छय मूर्छय ॥
ॐ धूं धूं धूनय धूनय ॥
ॐ म्लां म्लां आस्फोटय आस्फोटय ॥
ॐ छ्रीं छ्रीं छेदय छेदय ॥
ॐ रूं रूं उच्छेदय उच्छेदय ॥

© Purnanandalahari.org ©

ॐ ह्रूं ह्रूं हन हन ॥
ॐ गं गं धारय धारय ॥
ॐ लां लां स्तम्भय स्तम्भय ॥
ॐ स्तूं स्तूं प्रमथय प्रमथय ॥
ॐ ग्रां ग्रां ग्रासय ग्रासय ॥
ॐ स्वां स्वां विध्वंशय विध्वंशय ॥
ॐ प्लं प्लं प्लावय प्लावय ॥
ॐ भ्रूं भ्रूं भ्रामय भ्रामय ॥
ॐ क्रूं क्रूं मुद्रां दर्शय दर्शय ॥
ॐ बीं बीं बन्धय बन्धय ॥
ॐ दीं दीं दिशं बन्धय बन्धय ॥
ॐ आं आं अधो बन्धय बन्धय ॥
ॐ ऊं ऊं ऊर्ध्वं बन्धय वन्धय ॥
ॐ कीं कीं कीलय कीलय ॥
ॐ श्रीं श्रीं मीलय मीलय ॥
ॐ गीं गीं गिलय गिलय ॥
ॐ विलं कुरु कुरु ॥
ॐ हं सां विलम्बय विलम्बय ॥
ॐ ह्रां ह्रां ह्रूं ह्रूं फट् फट् अतीतानागतागतवर्तमानं समादिशयादिशय ॥
औं ऐं ह्रीं श्रीं पावय पावय ॥
त्रैलोक्ये वशवर्तिने एकोऽपि चण्डिकाहृदयं पूज्य पठीष्यतेऽत्यर्थफलम्
चण्डिकावश्यं कुरु कुरु ॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रः ॥
ॐ स्फां स्फीं स्फूं स्फः एकविंशति वारं जाप्यं राजद्वारे विवादे च शत्रुशङ्कटे
समसाङ्गणे कृते मनसा चिन्तितान्यपि सर्वाणि कार्याणि सिध्यन्ति ॥

© Dhumanandalahari.org ©

कट्टक् नगर वासिनी श्री चण्डिका देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः

लघु दुर्गा सप्तशती स्तोत्रम्

ॐ व्रीं व्रीं व्रीं वेणुहस्ते स्तुतिविधबटुके हां तथा
तानमाता स्वानन्दे नन्दरूपे अनहतनिरुते मुक्तिदे त्वां ।
हंसः सोऽहं विशाले वलयगतिहसे सिद्धिदे वाममार्गे
ह्रीं ह्रीं ह्रीं सिद्धिलोके कषकषविपुले वीरभद्रे नमस्ते ॥ १ ॥

ॐ ह्रींकारोच्चारयन्ती मम हरती नयं वर्ममुण्डप्रचण्डे
खां खां खां खड्गपाणे ध्रकध्रकध्रचिते उग्ररूपे स्वरूपे ।
हुं हुं हुंकारनादे गगनभुवि तले व्यापिनी व्योमरूपे
हं हं हंकारनादे सुरगणनमिते राक्षसान् हन्यमाने ॥ २ ॥

ऐं लोके कीर्तयन्ती मम हरतु भयं चण्डरूपे नमस्ते
घ्रां घ्रां घ्रां घोररूपे घघघघघटिते घर्घरे घोररावे ।
निर्मोसे काकजंघे घसितनखनखाधूम्रनेत्रे त्रिनेत्रे
हस्ताब्जे शूलमुण्डं कुलकुलकुकुले श्री महेशी नमस्ते ॥ ३ ॥

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ऐं कुमारी क्लहकुलमखिले कोकिले नानुराग
मुद्रासंज्ञात्रिरेखा कुरु कुरु सततं श्रीमहामारि गुह्ये ।
तेजाङ्गे सिद्धिनाथे मनपवनचले नैव आज्ञानिधाने
ऐं कारे रात्रिमध्ये सुपितपशुजने तत्र कान्ते नमस्ते ॥ ४ ॥

ॐ व्रां व्रीं व्रुं व्रूं कवित्वे दहनपुरगते रुक्मिरूपेण चक्रे
त्रिःशक्त्या युक्तवर्णादिककरनमिते दादिवंपूर्ववर्णे ।
ह्रीं स्थाने कामराजे ज्वल ज्वल ज्वलिते कोशितैस्तास्तु पत्रे
स्वच्छन्दं कष्टनाशे सुरवरवपुषे गुह्यमुण्डे नमस्ते ॥ ५ ॥

© Durmanantatamari.org ©

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोरतुण्डे घघघघघघघघे घर्घरान्यांघ्रिघोषे
ह्रीं क्रीं द्रं द्रों चचके रररररमिते सर्वज्ञाने प्रधाने ।
द्रीं तीर्थे द्रींतज्येष्ठे जुगजुगजजुगे म्लेछदे कालमुण्डे
सर्वांगे रक्तघोरा मथनकरवरे वज्रदण्डे नमस्ते ॥ ६ ॥

ॐ क्रां क्रीं क्रूं वामभित्ते गगनगडगडे गुह्ययोन्याहिमुण्डे
वज्राङ्गे वज्रहस्ते सुरपतिवरदे मत्तमातङ्गरूढे ।
सुतेजे शुद्धदेहे लललललललिते छेदिते पाशजाले
कुण्डल्याकाररूपं वृषवृषभहरं ऐन्द्रि मातर्नमस्ते ॥ ७ ॥

ॐ हुं हुं हुंकारनादे कषकषवसिनीमांसि वेतालहस्ते
सुंसिद्धर्षैः सिद्धसुसिद्धिढढढढढढः सर्वभक्षी प्रचण्डी ।
जूं सः सौं शान्तिकर्मे मृतमृतनिहडे निःसमे सीसमुद्रे
देवित्वं साधकानां भयभयवरदे भद्रकालो नमस्ते ॥ ८ ॥

देवी त्वं तूर्यहस्ते परिघमनि ते त्वं वराहस्वरूपे
त्वं ऐन्द्री त्वं कुबेरी त्वमसि च जननी त्वं पराणी महेन्द्री ।
ऐं ह्रीं क्लीं कारभूते अतलतलतले भूतले स्वर्गमार्गे
पाताले शैलशृङ्गे हरिहरभुवने सिद्धिचण्डी नमस्ते ॥ ९ ॥

हन्ताक्षे सौण्डदुःखं शमितभवभयं सर्वविघ्नान्तकार्ये
गां गीं गूं गैं षडङ्गे गगनगटितटे सिद्धिदे सिद्धिसाध्ये ।
क्रूं क्रूं मुद्रा गजाम्शो गसपवनगते त्र्यक्षरे वै कराळे
ॐ ह्रीं ह्रूं गां गणेशी गजमुखजननी त्वं गणेशी नमस्ते ॥ १० ॥

इति मार्कण्डेय कृत लघुसप्तशती दुर्गा स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

© Purnanandanath.org ©

पिण्डी रूप महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती समष्टि स्वरूप चण्डिकापरमेश्वर्यै नमः

रहस्यतन्त्रोक्त गुरु कीलकम्

शिव उवाच ।

पुरा सनत्कुमाराय दत्तमेतन्मयाऽनघ ।
संवर्ताय ददौ तच्च स चान्यस्मै ददौ च तत् ॥ १ ॥

सर्वत्र चण्डीपाठस्य प्राचुर्येण महीतले ।
ब्रह्मकाण्डः कर्मकाण्डस्तन्त्रकाण्डश्च सर्वथा ॥ २ ॥

अभूत्प्रतिहतस्तेन शीघ्रसिद्धिप्रदायिनी ।
तदा तेषां च सार्थक्यं कर्तुकामेन भूतले ॥ ३ ॥

दानप्रतिग्रहत्वेन मन्त्रोऽयं कीलितो मया ।
दानप्रतिग्रहाख्यं यत्कीलकं समुदाहृतम् ॥ ४ ॥

तदारभ्य च मन्त्रोऽयं कीलकेनाभिकीलितः ।
न सर्वेषां भवेत्सिद्ध्यै ये कीलकपराङ्मुखाः ॥ ५ ॥

ये नराः कीलनेनेमं जपन्ति परया मुदा ।
तेषां देवी प्रसन्ना स्यात्तः सर्वाः समृद्धयः ॥ ६ ॥

त्वत्प्रसूतस्त्वदाज्ञप्तस्त्वद्दासस्त्वस्परायणः ।
त्वन्नामचिन्तनपरस्त्वदर्थेऽहं नियोजितः ॥ ७ ॥

मयाऽऽर्जितमिदं सर्वं तच्च स्वं परमेश्वरि ।
राष्ट्रं बलं कोशगृहं सैन्यमन्यच्च साधनम् ॥ ८ ॥

© Purnanandalahari.org ©

त्वदधीनं करिष्यामि यत्रार्थे त्वं नियोक्ष्यसि ।
तत्र देवि सदावर्ते त्वदाज्ञामेव पालयन् ॥ ९ ॥

इति संचिन्त्य मनसा त्वार्जितानि धनानि च ।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥ १० ॥

समर्पयेन्महादेव्यै स्वार्जितं सकलं धनम् ।
राष्ट्रं गृहं कोशबलं नवं च यदुपार्जितम् ॥ ११ ॥

अस्मिन्मासि मया देवि तुभ्यमेतत्समर्पितम् ।
इति ध्यात्वा ततो देव्याः प्रसादं प्रतिगृह्य च ॥ १२ ॥

विभज्य पञ्चधा सर्वे त्र्यंशं स्वार्थं प्रकल्पयेत् ।
देवपित्रतिथीनां च क्रियार्थे त्वेकमादिशेत् ॥ १३ ॥

एकांशं गुरवे दद्यात्तेन देवी प्रसीदति ।
तस्य राज्यं स्वकं सैन्यं कोशः साधु विवर्धते ॥ १४ ॥

नानारत्नकरः श्रीमान् यथा पर्वणि वारिधिः ।
ज्ञात्वा नवाक्षरं मन्त्रं जीवब्रह्मसमाश्रयम् ॥ १५ ॥

तत्वमस्यादिवाक्यानां सारं संसारभेषजम् ।
सप्तशत्याख्यमन्त्रस्य यावज्जीवमहं जपम् ॥ १६ ॥

कुर्वेस्ततो न प्रमादं प्राप्नुयामिति निश्चयम् ।
कृत्वा प्रारभ्य कुर्वीत ह्यकुर्वाणो विनश्यति ॥ १७ ॥

© Purnanandalahari.org ©

नाहं ब्रह्म निराकुर्या मा मा ब्रह्म निराकरोत् ।
अनिराकरणं मेऽस्तु अनिराकरणं मम ॥ १८ ॥

इति वेदान्तमूर्धन्ये छान्दोग्यस्य प्रपञ्चनात् ।
प्रारभ्य तत्परित्यागो न तस्य श्रेयसे ततः ॥ १९ ॥

नाब्रह्मवित्कुले तस्य जायते हि कदाचन ।
न दारिद्र्यं कुले तस्य यावत्स्थास्यति मेदिनी ॥ २० ॥

प्रतिसंवत्सरं कुर्याच्छारदं वार्षिकं तथा ।
तेन सर्वमवाप्नोति सुरासुरसुदुर्लभम् ॥ २१ ॥

अन्यच्च यद्यत्कल्याणं जायते तत्क्षणे क्षणे ।
सत्यं सत्यमिदं सर्वं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ २२ ॥

पुत्राय ब्रह्मनिष्ठाय पित्रा देयं महात्मना ।
अन्यथा देवता तस्मै शापं दद्यान्न संशयः ॥ २३ ॥

इति गुरु कीलकं सम्पूर्णम्

© Purnanandahari.org ©

श्री सरस्वती स्तोत्रम् (श्री सिद्धसारस्वत मन्त्र वर्णैः घटितम्)

अस्य श्री सरस्वती स्तोत्र मन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः श्री सरस्वती देवता सृग्धरा अनुष्टुप् छन्दांसि
मम वाक् सिद्ध्यर्थे स्तोत्र पठने विनियोगः
करषडङ्ग न्यासाः
ॐ ह्रां-अङ्गुष्ठाभ्यां- हृदयाय- नमः
ॐ ह्रीं-तर्जनीभ्यां- शिरसे- स्वहा
ॐ ह्रूं-मध्यमाभ्यां-शिखायै- वषट्
ॐ ह्रैं-अनामिकाभ्यां-कवचाय-हुं
ॐ ह्रौं-कनिष्ठिकाभ्यां-नेत्रत्रयाय-वौषट्
ॐ ह्रः-करतलकरपृष्ठाभ्यां-अस्त्राय-फट्

ध्यानं:

शुद्धां ब्रह्मविचारसारपरमां आद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तक धारिणीं अभयदां जाड्यान्धकारापहां।
हस्तैःस्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदां।।

पञ्चपूजा:

ह्रीं ह्रीं ह्रीं हृद्यबीजे शशिरुचिकमलाकला विस्पष्टशोभे
भव्ये भव्यानुकूले प्रमुदित वदने विश्ववन्द्याङ्घ्रिपद्मे।
पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणत जनमनामोद संपादयित्री
फ्रोत्फुल्लज्ञानकूटे हरिहरदयिते देवि संसार सारे।।1।।

© Purnananda Lahari.org ©

ऐं ऐं ऐं जाप्यतुष्टे हिमरुचि मुकुटे वल्लकी व्यग्र हस्ते
मातर्मातर्नमस्ते दह दह जडतां देहि बुद्धिं प्रशस्तां।
विद्ये वेदान्त गीते श्रुतिपरिपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे
मार्गातीतस्वरूपे भव मम वरदे शारदे शुभ्र हारे।।2।।

ध्रीं ध्रीं ध्रीं धारणाख्ये धृति मति नुतिभिर्नामभिः कीर्तनीये
नित्ये नित्ये निमित्ते मुनिवर नमिते नूतने वै पुराणे।
पुण्ये पुण्यप्रवाहे हरिहर नमिते पूर्णतत्त्वे सुवर्णे
मातर्मात्रार्धतत्त्वे मतिमतिमतिदे माधवे प्रीतिनादे।।3।।

क्लीं क्लीं क्लीं सुस्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तक व्यग्र हस्ते
सन्तुष्टाकार चित्ते स्मित मुख सुभगे जृम्भिणी स्तम्भनीये
मोहे मुग्धप्रबोधे मम कुरु कुमतिध्वान्त विध्वंसमीड्ये
गीर्वाणी भारती त्वं कवि व्रत रसने सिद्धिदे सिद्धि साध्ये।।4।।

सौः सौः सौः शक्तिबीजे कमलभव-मुखाम्भोज-भूतस्वरूपे
रूपे रूप प्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकल्पे।
न स्थूले नैव सूक्ष्मे अपि अविदित विभवे जाप्य विज्ञान तत्त्वे
विश्वे विश्वान्तराले सकलगुणमये निष्कले नित्य शुद्धे।।5।।

स्तौमि त्वाहं च देवी मम खले रसना मा कदाचित् त्यजत्वं
मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु मम नो पातु मां देवी पायात्।
मा मे दुःखं कदाचित् क्वचित् अपि समये पुस्तकेनाकुलत्वं
शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीः मा स्वकुण्ठा कदापि।।6।।

© Purnanandanath.org ©

इत्येतैः श्लोक मुख्यैः प्रति दिनं उषसि स्तौमि यो भक्ति नम्रा
वाचस्पतेः अपि अविदित विभवो वाक्य शब्दार्थ वेत्ता।
स स्यात् इष्टार्थ लाभात् सुतमिव सततं पातु मां सा च देवी
सौभाग्यं तस्य लोके प्रसरतु कविता विघ्नमस्तं प्रयातु।।7।।

निविघ्नं तस्य विद्या प्रभवति सततं च अश्रुत ग्रन्थ बोध कीर्तिः
त्रैलोक्य मध्ये निवसतु वदने शारदा तस्य साक्षात्।
दीर्घायुः लोकपूज्यः सकलगुणमयः सन्ततं राज मान्यो
वाग्देव्याः सुप्रसादात् त्रिजगति विजयी जायते सत्सभासु।।8।।

ब्रह्म चर्य व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः
सारस्वत स्तोत्र पाठात् सम्यक् इष्टार्थ लाभवान् ।।9।।

पक्षद्वयं त्रयोदश्यां एकविंशति संख्यया
अविच्छिन्नं पठेद्यस्तु स कवित्वं लभेत् ध्रुवं।।10।।

ससर्व पाप विनिर्मुक्तो सुभगो लोक विश्रुतः
वाञ्छितं फलमाप्नोति लोकेऽस्मिन् नात्र संशयः।।11।।

इति सनत्कुमार संहितायां धारण सरस्वती स्तोत्रं सम्पूर्णमस्तु।।

श्रीशुभं भवतु

सिद्धसारस्वत मन्त्रः ह्रीं ऐं ध्रीं क्लीं सौ'

ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं वाग्देवतायै नमः

© Purnanandalahari.org ©

The asurAs of dEvImAhAtmyam

Durga saptashati is a part of MarkanDeya purANA comprising of 700 shlokAs categorized into 3 charitAs - each representing the battle between the divine and Asuric forces. The first charitA is devoted to mahAkAli, the second to mahAlakShmI and the third to mahAsaraswati. The first charitA represents the battle between mahAviShNu and madhu and kaitabhA with mahAkAli as mahAmAyA working from behind. The second charitA talks about the fierce battle between mahAlakShmI and mahishAsurA. The third charitA deals with the battles between a multitude of asurAs and mahAsaraswatI.

While the charitAs appear to be the story of the victory of good over evil and explains the various strategies used by the divine forces to win the battle, a deeper dive into the true meaning of the text reveals the truth of life and the struggle that is faced by each one of us in our daily lives. While on the surface level it appears as the friction between the dualisitic forces of life - the good and bad, the truth and false, the knowledge and ignorance, and immortality and death etc, the integration of the navAkSharI mantra along with the saptashati charitrAs bring out the triputI tatvAs of the existence – (create, sustain, destroy) or (brahmA, vishNu, shivA) or (rig, yajur, sAmA) or (agni, suryA, sOmA) or (mahAkAli, mahAlakshmI, mahAsaraswatI), or(jnAtrU, jnEyA, jnAnA) and so on.

As explained earlier, the surface level dualistic forces seem to be obvious and apparent in our daily lives. For every divine thought, there seem to be an equal and opposite demonic thought that is inherent in life that pulls us in an opposite direction. This simple theory is established in the first chapter where the creation is established by viShnU's yOga nidrA - a blissful state- A state of fullness and complete anandA. There is no creation at this state and when the first spandA happens and the creation is about to

© Purnanandalahari.org ©

start, the creation of the demonic forces also occurs as a very natural event like a wax forming in the ear. The reason for using this analogy is simply to indicate that there is no need for any effort to be made for creation of these forces and they are inherently natural. Madhu as a nectar is represented as bahutvA meaning the desire to be many. KaitabhA is an insect represented as bahutva AnandA meaning the joy in manifestation. Thus, when the first spandA happens to create, the desire to be many and the joy experienced during this manifestation are the fundamental emotions that can be expected. These are related as demonic forces and they were ready to even take over brahmA the creator - meaning brahmA would have been bonded by these emotions as well. These demonic forces have the same equal but opposite strength as divine. These two demonic forces are destroyed by mahAkAll as the mahAmAyA. This is explained in the first charitA.

The second charitA is the continuation of the demonic forces as the creation further evolves and the trigunAs are formed and embodied into the jIvAs. The various rajO gunAs of anger, lust, etc are strong enough to result in an exaggerated ego-sense onto the jIvA and this works to the distortion of the natural law of conception. This rajO gunA is represented by the asurA named mahiShAsurA, the representation of a buffalo relates to the rajO guna, and mahAlakShmI comes on a lion that represents the dharmic path and wins over the rajO gunAtma mahishAsurA.

The third charitA represents the further continuation of the demonic forces as the creation continues. By this time, the jIvA has lost his own true identity and this is created by the demonic force called avidyA / ignorance. AvidyA is the equal and opposite force of the sarvajnA quality the parabrahmA. The work of avidyA on the jIvA over several births results in a smoky or obscured vision and this is represented by the demon called dhUmralOcanA. Destroying this takes just a "hUM" kArA by paradEvatA and this vanquishes the avidyA instantly and makes the inner light shine like a crystal. The next

© Purnanandalahari.org ©

demonic force that came is Chanda and Munda represented by different schools of thoughts as rAga and dvEshA or pravitti and nivritti or tUla vidyA and mUla vidyA. The tUla vidyA and mUla vidyA represents the mulAdhArA and sahasrAra chakrA and chAmunDA represents the dEvI that helps the kunDaliNI at the mUlAdhArA to reach the sahasrArA.

The next demon is raktabljA who represents the desire/thoughts to continue with one's own identity. If the thought is destroyed or controlled, it manifests itself into multi-fold times. This demon is ably supported by his eight commorades - udyudhA , kambu, kOtivIryA, dhaumrA, kAlakA, daurhrudA, mauryA and kAlakEyA. These demons are represented by the eight bondages that restrict the jIvA from attaining the supreme consciousness. These eight bondages are Ghrina (Hate), Lajja (Shame), Bhaya (Fear), Shankaa (Doubt), Jugupsaa (Reproach), Kula Abhimana (Caste), Jaati (Creed), and Sheela (Modesty). To control these ashta pAshAs, ashta mAtrukAs (brAhmI, mAhEshvarI, kaumArI, vaiShNavI, vArAhI, nArasimhI, mAhEndrI, and cAmuNDA) are maifested by the paradEvatA. These dEvatAs cut away the bondages, relieves that jIvAs from these bondages, and help him walk towards the path of self-realization.

The next demon to face is nishumbA who is represented by the mamakArA (my-ness). Each one of us can relate in our lifetime to this demonic quality. We can literally see in a child's growth that one of the first sentence spoken is "This is mine". This my-ness is attached to the jIvA and seldom gets detached. This mamathA is a biggest culprit to restrict the jIvA to a limited vicious circle and stop from expanding. By cutting off the mamakArA, the jIvA is left with nothing but self that is the ahaM-kArA which is represented by the demonic force - shumbhA.

Even though the jIvA has completely lost everything and is simply left with just the ahaM-kArA, this demonic force is enough to restrict the jIvA from walking the path

© Purnanandalahari.org ©

towards jnAnA. This demonic force in turn brands the divine force as the egoistic force playing unfair games in the battle when the demonic force is reduced to just the ahamkArA whereas the divine force has totally manifested into multiple energies. The divine force then merges everything to one, proves that there is nothing else other than that, and asks the demonic force to shed the ego. In spite of this, the ahamkArA is strong enough to continue the battle until it is forcefully removed.

While saptashati teaches the techniques of battling these internal demons of our life, the real beauty of this text is its intertwined nature with the navAkSharI mantrA. A true sAdhakA need not know the techniques but just continue chanting the navAkSharI mantrA graced by the GurunAthA and that is enough to cut through all the demonic force in action and can lead one to merge with Her.

Om namaH ChandikAyai

© Purnanandalahari.org ©

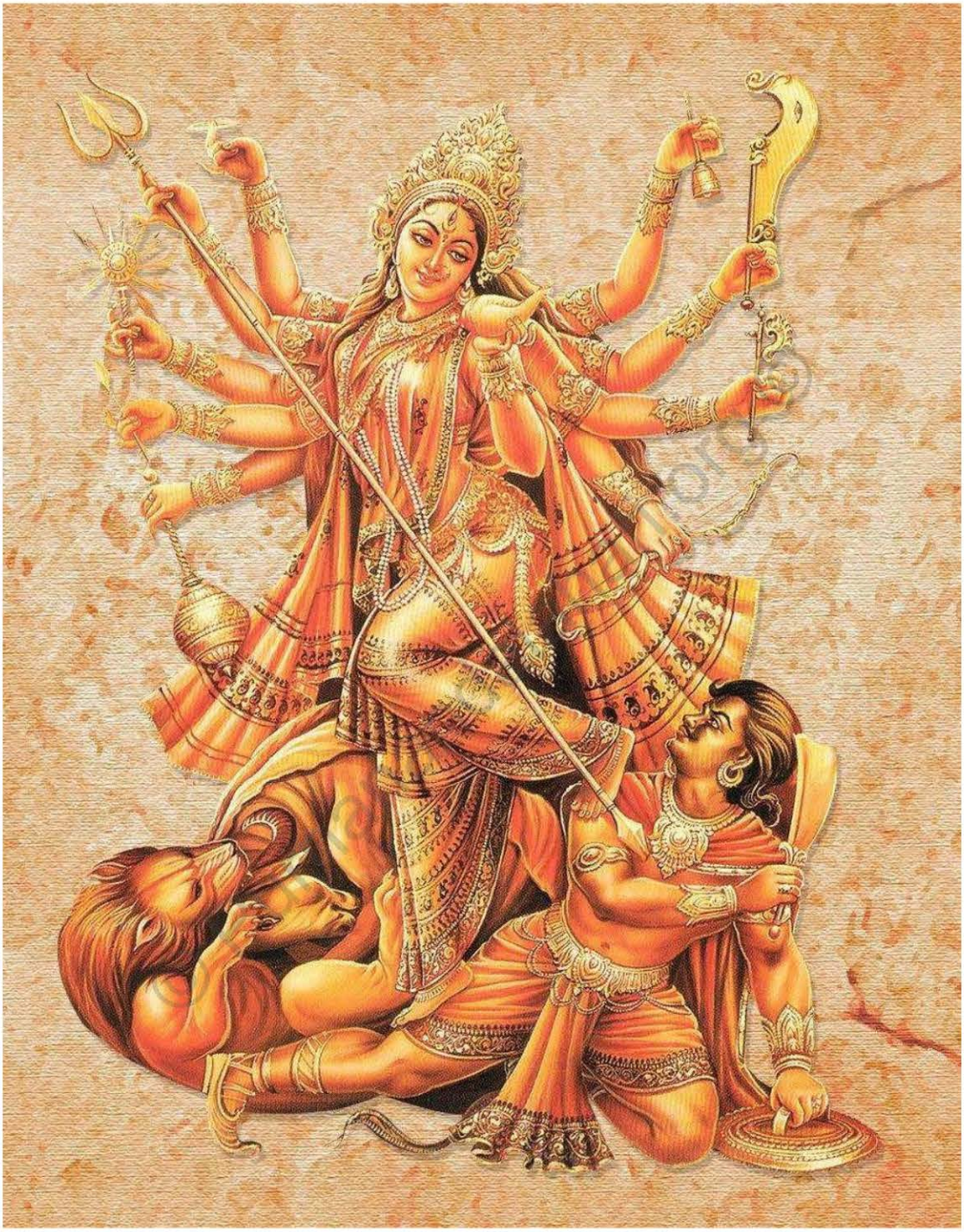

श्री महिषासुरमर्दिन्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः

Sundari and Kali – By AtmAnandanAthA

The first of the dasa maha vidyas is Kali, also known as AdyA, dakshiNakAlikA or vidyArAgynI. The third is Sundari who is known as tripurasundarI, shOdasI, or srividyA. The seer or rshi of the former is mahAkAlA bhairavA and the latter is AnandabhairavA / dakshiNAmOrthy. The meter of chanting is ushNik and gAyatrI respectively. The traditions declare two types of routes for the aspirant, the kali kulam and the sundari kulam.

The tantras declare that the Primordial power when seen on the left is sundari and on the right is kali- "vAme sundari dakshiNe kAlikA". Vama can mean left and also beauty, creative urge (as referred by vamana- vomiting- the world from the dissolute state (laya)–creative urge). dakshiNa can mean right and also skill / strength and fee (as in havana dakshina- the completion of any ritual is after offering the fee- dakshina- the last activity of the ritual – hence will signify an end.). Hence sundari is attributed to creative urge with all the essence of beauty and kali to the end (annihilative force) with a fierce aspect. Since the matter is neither created nor destroyed it changes from one form to another, the cessation of a particular form is the annihilation and the emergence of another is the creation. Thus we find both have a common point to which one travels while the other emerges from it.

This is an attempt to find the common grounds of the above deities.

The form: The meditative verses of these two deities are examined.

Kali: 'ShavArUdAm mahAbhImAm ghora damshtrAm hsaNmukhIm

caturbhujAm khaDgamuNDavarAbhayakarAm shivAm

muNDamAlAdharAm devIm lalajjihvAm digambarAm

sadA sancintaye kalIm smashAnAlaya vasinIM'

Kali is meditated in the midst of a cemetery having a huge naked form with a dark hue, terrific fangs, standing on a corpse, having a sword, severed head, gestures of dispelling fear and granting desires in her hands, with her face filled with laughter, wearing garland of severed heads.

© Purnanandalahari.org ©

Sundari: dhyaye kameshvarAnkasthAm kuruvindamaniprabhAm

soNambarasrgalepAm sarvaNgInavibhUshitAm

saundaryasevadhim seShupAshANkusojvalAm

svabhAbhiraNimAdhyAbhisevyAm saravaniyAmikAm

saccidAnandavapuSham sadayApANgavibhramAm

sarvalokaika jananIM smerAsyAm lalitAmbikAm

Sundari the personification of beauty and bliss, the only mother of the three worlds, has a red hue, clothed with red garments, decorated with golden ornaments , seated on the lap of Siva kamesvara, holding a noose, goad, sugarcane bow and five flowery arrows, glancing with piety and a smile on her lips on the throne surrounded by animAdi devatas,

Though the differences between the above are very prominent, there is a subtle identity in the above.

Dark hue is absence of any color. The spectrum VIBGYOR represents the whole visible range. . Ultra violet or infra red will seem to us as black only. Violet, Indigo, Blue and green are the hues of Rajamatangi Devi; yellow is Mahavarahi Devi's hue. Orange and Red are seen as sundari devi's hue. In the Srividyopasana karma Matangi and Varahi are inherent in Lalitha, since they emerged from the Sugarcane bow and flowery arrows respectively. Hence from the above equivalence seen Sundari's hue may be taken as to represent the whole visible range. Thus continuance of Kali is Sundari as seen from ultraviolet to violet during creation and from Sundari to kali as seen from red to infra red during annihilation. .

Both are full of joy – "hasan mukhIm" in kali and "smerAsyAm lalitAmbikAm" for sundari, the expression is only different. Though kali's laughter is like a thunder clap- attahAsam while sundari has an "Anandollasa vilAsa hAsam" – peals of joyful laughter. The same thunderous laughter of Kali that annihilates every thing becomes a gentle smile with change of form to Lalitha on commencement of creation.

© Purnanandalahari.org ©

Both have four arms. Sundari holds the noose and goad denoting the attractive- attraction to the undivided knowledge and repulsive- repulsion to the dual knowledge, states of mind, The sugarcane bow as the pure mind and the five flowery arrows denoting the world- these are held separate not connected hence the detachment from the state of doer can be envisaged. Kali displays gestures of removal of fear and granting boon denoting the removal of the notion of the other and thus bestowing bliss of undivided state of mind. The sword denotes the scriptures which help in the removal of ego which is shown as the severed head. Thus we can conclude the noose and goad are identical in function with the gestures of dispelling fear and granting boons and the sugarcane bow with arrow to the sword and the severed head.

Both have a crown and a crescent of moon on their crown – diadem, Crown is indicative of the royalty, as a consort of the Brahman – both have names linked to it- viz., Mahaaragyni and vidyaaragyni. The crescent of moon is indicative of the consciousness at the highest level.

The ear rings of Sundari is 'tatanka yugaleebhoota tapanodupamandalaa' (sun/moon) and that of Kalika is 'baala shava yugama karnaavtamasa' (young boy's dead bodies). The first identity is that both of these ear ornaments are inert. Sun /Moon signify the vastness of the creation. Imagine that if they were the ear rings how big the body would be. The agama and nigama are likened to young boys and their death is symbolic of end of all knowledge during dissolution.

The Lord of Kali and Sundari are Maha kala and Siva Kameshvara respectively. Both are in eternal union with their consorts. 'MahakAla ratAture' and 'siva kAmeshvarAngkasthA' describe this state. Both are identical to their consorts, are auspicious and blissful in nature.

There is another meditative verse which unifies both deities:

samvartAnala kOTi nIradarucam pAshANkusumAshugAn

khaDgam mundamabhamaikshvarIm varam hastAmbjujairaShtabhih

kAmesAnasivOparisthitAm tryakshAm sadAvahantIm parAm

srIcintAmaNibIjarAja vapuShIm dhyAye mahAshoDhasIm.

© Purnanandalahari.org ©

The mantra: Dakshina Kali mantra has 22 syllables made up of seven vowels (a+ aa+ i+ ii+ u+ e+M) and nine consonants (k+N+d+r+L+v+s+H+Ksh) totaling to sixteen (matrukaa shodasi); Sri vidya is of 15 syllables made up of four vowels (a+ii+E+M) and five consonants (k+ L+ r+ h+ s) totaling to nine (navaaksharee). In the Srividya kAdipancadasi mantra , the three 'ka' and two 'ha' letters pertaining to the Siva and the three 'hrIm' are pertaining to both Lalitamba and Kameshvara, the rest are pertaining to Lalithamba. Similarly in the dakshina kalika mantra the four 'hUm' are pertaining to the mahAkAlA, four 'hrIm' to both MahakAkA and DakshiNa, and rest are pertaining to DaksiNa kali. Thus we find the 'hrIm' kArAs representing the siva sakti union is there in both mantras, with rest distributed among the respective siva and sakti.

The breakup of the mantra in to vowels and consonants will result in 37 parts in the srividya mantra, while dakshina kalika mantra will result in 84 parts. These will signify the 36 tattvas and the tattvaatiita parasiva in sundari and the myriad of 84 lakh entities including the tattvaatiita parasiva in Daksina kalika. Since dakshiNa is dissolution all the myriad entities are counted while Sundari is creation the tatvAs (Or basic building blocks) are enumerated.

On seeing the vowel distribution in both mantras, it is unique to note that both mantras have the tattvaatiita parasiva indicated by the 'E' kAra (yad EkAdasamAdhAram bIjam koNa trayotbhavam- the eleventh vowel is the base – the substratum of creation). Dakshina has one 'a'kAra indicative of the Siva tattva (EkaivAham- Vedas) while Sundari has ten 'a'kAras, which signify the creation of various entities (bahusyAm prajAyeti). The vowel 'A' signifying AnandA is there in DakshiNa, as shown in her meditative verse 'hasan mukhIm', also she is described as 'aTTahAsAm'. Further there is another vowel 'i' signifying the ichha sakti (will) in dakShiNa denoting that dissolution is by the divine will. The vowel 'I' is seen both in Sundari and daKshiNa, denotes the 'IKshaNa' – the totality of view- which is required for both dissolution and creation. . The Four 'I'kArAs in sundari will denote the four saprsha tattvas by which the whole world is first felt by the creation , since space is subtle the first solid creation which is felt is air. There are ten 'I'kArAs in dakshiNa which shows her intent for dissolution in all directions.

The Yantra:

The yantra of sundari is the well known sricakra. The yantra has a bindu, trikona, astakona, two dasa kona, fourteen kona, eight and sixteen petals, and a bhupura- square with three lines; the central figure consisting of triangles is formed by the intersection of four upward triangles and five downward triangles.

© Purnanandalahari.org ©

Kalika has a yantra with bindu, five triangles- pointing downward, eight petals and a bhupura - square

On a real time view the yantra of kalika can be mapped onto a sri yantra. Thus kalika is inherent in Sundari. There is a puja paddati wherein the sri yantra has Kalika attendant deities mapped onto it, Thus Sundari is inherent in Kalikaa.

The Attending deities:

The initial main worship in a pooja is to the laya anga devatas, they are a part of the central deity. Sundari and Kali have the layanga devatas in the same format. The sadanga devatas , thithi nitya devatas and the gurumandala are there for both. The vidyavatara guru mandala of nine gurus is there separate for each Devi. Thus the identity found here is the format of the pooja which have the same notation though there are varying deities.

The Stotras:

There are a set of 108, 1000 and 300 names – asttotara satam, sahasranamam and trisati for both devis. There is a kavacam (armor) made of various variations of the mantras of the deity in both the system of worship, respectively called jaganmangala kavacam and trailokyamohana kavacam. Both have got the list of attendant deities called a khadagmala. (kahdga by katapayaadi samkhya is thirty two – the suddha vidyaa tattva which is the unity of the world, creator and the self.)

The 'ka'kAra kali sahsranAma (DKSN) called 'saamraajya medhaa'has six names with the first (prathma) kUta of sundari from 498 to 503 name. There are names on the creative aspect like 'kaaraNaahvayaa' (Cause of the creation), Kaha hetuh (Cause of the rise of the mantras), Kaamaa (primordial Creative urge). This shows clearly the identity of kAlikA and Sundari.

The LalitAsaharanAma (LSN) called rahasya naama sahasra has a name 'klIMkAri'- 'ra' and 'la 'being interchangeable this can also be read as 'krlm kAri'; The name 'rasgynA' is a direct reference to the "krlm'-kArA , since this bija akshara is denoted as 'rasa' by many kali tantras. There are also direct names on annihilative aspect like 'mahaa kali', 'mahaa grasaa- the great (big) swallower', 'maha ashanaa- the great (big) devourer', 'layakaree'(Cause of dissolution). These show the identity of Sundari and kAlikA.

© Purnamandalahari.org ©

The Trisati of both devatas are unique in that, they are made up of the names starting with the respective moola mantras; Daskhina Kali Trisati (DKT) is called sarva manga vidyaa has fourteen names of the twenty two syllables totaling to three hundred and eight; Lalita trisati (LT) is called Sarva poortikara stava has twenty names for each of the fifteen syllables totaling to three hundred.

The following name is exactly common in both sahasranamaas and Trisatis:

1. Kaantaa (DKSN – 617) (LSN – 329) (DKT-149)(LT- 154)

The following names are common to both sahasranaamaa and Lalita Trisati

1. Kalyanee (DKSN – 3) (LSN – 324) (LT-2)
2. Kalavatee (DKSN – 6) (LSN – 327) (LT-6)

The following name is common in both trisatis and Lalita Sahasranaama

1. Hreem matih (DKT- 268) (LT-88) (LSN-302)

The following names are common in both sahasranamaas:

2. Kalaatmikaa (DKSN – 9) (LSN – 611)
3. Kapardinee (DKSN – 377) (LSN – 793)
4. Kalaa maalaa (DKSN- 390) (LSN – 794)
5. Kalaa nidhih (DKSN – 421) (LSN – 797)
6. Kaashtaa (DKSN – 477) (LSN – 859)
7. Kaatyaayinee (DKSN -679) (LSN- 556)
8. Kaamaroopine (DKSN -769) (LSN – 796)
9. Kuleshvaree (DKSN – 837) (LSN-439)
10. Kurukullaa (DKSN – 846) (LSN- 438)
11. Kootasthaa (DKSN882) (LSN 896)
12. Kushalaa (DKSN 869-886) (LSN-436)
13. Kaulinee (DKSN – 984) (LSN(94)

The following names are common to Lalita Sahasranama and Dakshina Kalika Trisati

1. Svaadheena vallbhaa (LSN -54) (DKT- 282)
2. Svaahaa (LSN- 535) (DKT- 283)
3. Kaamaakshee (LSN- 62) (DKT- 147)

The following names are common in Dakshina Kalika sahsaranamaa and Lalita trisati

© Purnamandalahari.org ©

1. Kaameshee (DKSN- 600) (LT-143)
2. Kamalaakshee (DKSN -50) (LT -7)
3. Karabhoru (DKSN -381) –(LT- 148)
4. Kamaneeyaa (DKSN 486) (LT- 5)

The following name is common in both Trisatis:

1. Hreem (DKT-270) (LT-99)

The following names have some slight variations, found in the four said stotras:

1. Kadamba vana madhyagaa (DKSN – 211)/ Kadamba vanaantasthaa (DKSN-218)= Kadamba vana vaasinee (LSN – 60) = kadamba kaananaavaasaa (LT -10)
2. Kamalaaksha pra poojitaa (DKSN- 52)= Kamalaaksha nishevitaa (LSN-558)
3. Kadamba kusumaamodaa (DKSN- 212) = Kadamba kususma priyaa (LSN -323 / LT 11)
4. Kalana (DKSN- 421) = Vigyaana kalanaa (LSN-902)
5. Kaamakalaa (DKSN- 609) = Kaamakalaa roopaa (LSN-322)
6. Kaameshee (DKSN-600) = Mahaakaamesha mahishee (LSN- 233)
7. Kaama roopaa (DKSN- 647) = Kaama roopinee (LSN-796)
8. Kaamadaa (DKSN- 706) = Kaama dayinee (LSN – 63)
9. Kakaaraa (DKSN- 21) = Kakaara roopaa (LT-1)
10. Kanja netra (DKSN- 99) = Kanja locanaa (LT-16)
11. Kalee (DKT-141)-Kaalikaa (DKT-148) Mahaakalee (LSN-751)
12. Kastoori tilakaananda (DKSN254) Kastoori tilaka priyaa (DKSN-255) = Kastoori tilakaancitaa (LT160)
13. Kaakinee (DKSN – 477) = Kaakinee roopa dhaarinee (LSN -513)
14. Karunaa (DKSN – 23) = Karunaa rasa saagaraa (LSN- 326)
15. Dayaa (DKT-101) Dayaamoorthih (LSN – 581)
16. Daksha yagynaghnee (DKT- 100) Dakshayagyna vinaashinee (LSN-593)
17. Dakshinaabhimukhee (DT- 105) Dakshinaamoorti roopinee (LSN- 725)
18. Kevalaananda roopinee (DKT-170) Kevalaa (LSN-623)
19. Kshipraprasaaditaa (DKT- 115) Kshipra prasaadinee (LSN- 869)
20. Haahaahoohvaadi gandharvagaanalaalasaa(DKT-306) Haa haa hoo hoo mukha stutyaa (LT-177)
21. Haanivrtyaadikaranaa (DKT-298) Haani vrddhi vivarjitaa (LT-178)
22. Kaala bhaira poojitaa (DKT- 145) Mahaa bhairapoojitaa (LSN- 231) Kaala poojyaa (DKSN-619)

© Purnanandalahari.org ©

23. Kaavyaamrta rasaanandaa (DKT-153) Kaavyaalapa vinodinee (LSN-613) Kavya lolaa (LT-242)
24. Svadhistaana padmasthaa (DKT-285) Svadhishtaanaambujagataa (LSN-504)
25. Kaamakoti vilaasinee (DKT- 154) Kaamakoti nilayaa (LT-259) Kaamakotigaa (LSN- 589)

The following names are different, but mean the same in the said four stotras:

1. Kaarma trotana karee (DKSN-723) = Paramantra vibhedhinee (LSN-812) (Destruction of effects of evil mantra prayogaas on the devotees)
2. Dakshaa (DKT- 106) = Kushalaa (LSN- 436) (DKSN 869-886) (Skillful)

© Purnanandalahari.org ©

V. திருவடிச் சிறப்பு

1. ஒரு வரலாறு

ஓர் ஊரில் ஒரு செம்படவன் (வலைஞன்) இருந்தான். மீன் பிடித்து விற்று ஜீவநம் பண்ணிவந்த அவன் பகவான்-நாராயணன் என்று ஒருவர் இருப்பதாகக் கேள்விப்பட்டு அவரைப் பார்க்கவும், அவரைப்பற்றி அறியவும் ஆசைப்பட்டான். அவனுக்கு அவ் வாசையை நிறைவேற்றிக் கொள்ளும் வழியை அவ்வளவு ஸுலபமாகச் சொல்லிக் கொடுப்பவர் அங்கு யாரும் இல்லை. ஆனால் அவ்வூரில் ஒரு புரோஹிதர் வாழ்ந்து வந்தார். அவர் வேத சாஸ்த்ரங்களையெல்லாம் நன்கு கற்றுணர்ந்தவர். பகவத் விஷயங்களைப் படிப்பின் மூலம் தெரிந்து கொண்டிருந்தவர். அவரிடம் சென்று அந்தச் செம்படவன் தனக்குப் பகவான் ஸ்ரீமந் நாராயணனைக் காட்டித்தர வேண்டுமெனக் கேட்டுக் கொண்டான். அவர் அந்த இழி குலத்தவனுக்குச் சொல்லல் தகாதெனக் கருதித் தட்டிக் கழிப்பதற்காக, "நீ ஒரு நூறு ரூபாய் பணம் சேகரித்துக் கொண்டுவந்து கொடு! உனக்கு அப்போது நான் பகவானைப் பற்றிச் சொல்லித் தருகிறேன்" எனச் சொல்லி அனுப்பிவிட்டார். நூறு ரூபாய் சேகரிக்க அவனால் எங்கே முடியப் போகிறது என்று எண்ணியே அவர் அவ்வாறு சொல்லி யனுப்பினார். ஆனால், அவன் அதில் அதி தீவ்ரமாக நின்று வாயைக்கட்டி, வயிற்றைக் கட்டி மீன் பிடிக்கும் தொழிலிலேயே சில மாதங்களுக்குள் 100 ரூபாய் சேகரித்து எடுத்துக்கொண்டு வந்து அதே புரோஹிதரிடம் தந்து தனக்குப் பகவானைக் காட்டித் தரவேண்டுமெனக் கேட்டான். அப்பொழுதும் அவர், 'இவன் பகவானைக் காணத் தகுந்தவன் அல்லன்'

எனக் கருதி அவன் தலையில் கவிழ்த்துக் கொண்டிருந்த மீன் பிடிக்கும் கூடையையே சுட்டிக் காட்டி, 'இதுதான் உனக்குப் பகவான்; போ!' எனச் சொல்லி யனுப்பி விட்டார். அதையே வேதவாக்காகக் கருதி மகிழ்ந்த அவன் உடனே வீடு திரும்பிக், கூடையையே தெய்வமாக வைத்து, அதற்கே தூப தீப நைவேத்ய ஆராதனுதிகள் எல்லாம் செய்து, அதன் அருகேயே அமர்ந்து ஏகாக்ரத சித்தத்தோடு 'நாராயணு! நாராயணு!' என ஜெபித்துக் கொண்டே இருந்தான். எவ் வேலை தொடங்கினுலும், எவ் விஷயத்திற் ப்ரவேசித்தாலும் அக் கூடைக்கு ஒரு நமஸ்காரம் செய்யாமல் தொடங்குவதுமில்லை; ப்ரவேசிப் பதும் இல்லை. இப்படி அவனது மூட பக்தியானது வளர வளர, அவன் அக் கூடையின் மீதே ததேகத் த்யாநமா யிருக்க ஆரம்பித்து விட்டான். அவனது அந்தரங்க பக்திக்கு இரங்கிய பரந்தாமன் ஒரு நாள் அக் கூடையின் மீதிலேயே சங்க சக்ர கதாதாரியாக, நீலமேக ச்யாமள னுகக், கேசாதி பாதாந்தம் அழகனுகத் தர்சநம் தந்தார். அது கண்ட செம்படவன் அவரைப் பார்த்து, 'நீ யார்?' எனக் கேட்டான். அவர், 'நான் தானப்பா நீ இது வரை யில் கூப்பிட்டுக் கொண்டிருந்த நாராயணன். என்னைத் தெரியாதா? உனக்கு!' என்ருர். அவன் அது கேட்டு, 'நீ யாரோ? நீதான் நாராயணன் என்று யார் கண்டது? எனக்குச் சொல்லிக் கொடுத்த குருநாதர் ஒருவர் இருக் கிருர். அவர் வந்து நீ தான் நாராயணன் என்று சொன்னுரானுல்தான் நான் ஒத்துக் கொள்வேன். நான் போய் அவரை அழைத்து வருகிறேன்; நீ அதுவரையில் இங்கேயே இருக்க வேண்டும்' என்ருன். தெய்வம் என்ன செய்யும் பாவம்? அன்புக்குக் கட்டுப்பட்ட அந்தத் தெய்வம் 'தெய்வமே' என்று அங்கேயே நின்று கொண் டிருந்தது. செம்படவன் நேரே புரோஹிதர் வீட்டுக்குப்

போனான். அன்றே அவர் வீட்டில் திவஸம்; திவஸம் (சடங்கு) முடிந்து திண்ணையில் அமர்ந்திருந்தார் புரோஹிதர். ஆனால் அன்று அவர் கீழ் ஜாதி மக்களைப் பார்க்கவும் மாட்டார்; அவர்களோடு பேசவும் மாட்டார். என்ன செய்வது? செம்படவனோ, 'ஸ்வாமீ! நாராயணன் வந்திருக்கிறார். நீங்கள் வந்து பாருங்கள். நீங்கள் வந்து பார்த்துச் சொன்னால்தான் நான் ஒத்துக் கொள்வதாகச் சொல்லி அவரை அங்கேயே நிறுத்தி வைத்துவிட்டு வந்திருக்கிறேன்' என்று கூறினான். அவர், அவனுக்குப் பைத்யம் பிடித்து விட்டதாக எண்ணி அவன் சொல்வதையும் நம்பாது மௌநமாகவே இருந்துவிட்டார். பின்னும் அவன், 'ஸ்வாமீ! அவர் நம்ம கடலில் கிடைக்கிற சங்கும், ஸூர்யன் போல ஒன்றும், பாணத்தடி ஒன்றும், தாமரைப் பூவும் கைகளில் வைத்துக் கொண்டிருக்கிறார்; நம்ம கடல் போல நீலமாயிருக்கிறார்; கால் முதல் தலை வரை மிக அழகு படைத்தவராக இருக்கிறார்' என்றெல்லாம் வர்ணிக்கத் தொடங்கினான். அதைக் கேட்டதும்தான் அவருக்குத் தூக்கி வாரிப் போட்டது. 'நாராயணனைப் பற்றி முன்பின் கேள்விப்பட்டிராத இவன் எப்படி அவரை இப்படி வர்ணிக்க முடியும்?' என்று ஆச்சர்யப்பட்டு, 'எதற்கும் சென்று பார்ப்போம்' எனத், தம் (அன்றைய) நியமங்களையெல்லாம் துறந்து அவனுடனேயே அவன் வீட்டுக்குப் போனார் புரோஹிதர். போய்ப் பார்த்தால் அவனுடைய மீன் கூடையின் மீது நீலவண்ணனான நாராயணன் நிற்பது அவருக்குத் தெரிந்தது. 'இவர் தானப்பா நீ கேட்ட நாராயணன்' என்றார்' அவர். அவனும் உடன் அவருடைய திருவடிகளில் வீழ்ந்து வணங்கி, ஆநந்த ஸாகரத்தில் மூழ்கினான். ஆனால் புரோஹிதருக்குப் பகவானுடைய சிரஸு முதல் கால் வரையில் இரண்டு திருவடிகளைத் தவிர மற்றைய அங்கங்கள்தாம் கண்ணுக்

குத் தென்பட்டன. ஏனெனில் அவருக்கு அவரது திருவடிகளைத் தர்சிக்கக் கூடிய அளவுக்குப் புண்ய விசேஷம் அமையவில்லை.

மற்ற அங்கங்களின் தர்சநம் கிடைத்ததுகூடச் செம்படவனுக்கு அவர் வாயிலாக வார்த்தை வந்தால்தான் நம்பிக்கை ஏற்படும் என்ற காரணத்திற்காகத்தான். அவர், திருவடியைத் தர்சிக்காமல் திருமேனி முழுதும் தர்சித்தும் கூடத் தர்சநம் பெற்றவராக ஆகவில்லை. ஆனால் கேவலம் மூட பக்தியினால் முன்னுக்கு வந்த செம்படவனோ அஸாத்ய நம்பிக்கையின் காரணமாயும், அசஞ்சல பக்தியின் காரணமாயும் வேதம் வல்ல தன் குருவுக்கும் கிட்டாத திவ்யமான பாத தர்சநம் என்ன, திருமேனிக் காட்சி என்ன அனைத்தையும் பெற்றான். இதிலிருந்து என்ன தெரிகிறது என்றால் தெய்வத்தின் பாத தர்சநம் கிட்டுவதென்பது அவ்வளவு எளிதல்ல. பாத தர்சநத்துக்கு மிஞ்சித் தர்சநம் வேறெதுவும் இல்லை என்பனவாம். அத்தகைய சிறப்பு திருவடிக்கு ஏற்படுவானேன்?

தெய்வத்தைவிடத் தெய்வத்தின் பாதார விந்தங்களுக்கே மஹிமை அதிகம்*. ஏனனில் தெய்வம் செய்யும் எல்லாச் செயல்களையும் அந்த இரண்டு பாதங்களே செய்ய வல்லனவாய் உள்ளன. அதுவன்றித் 'திருவடி'† என்ற

---

* "நின்னிற் சிறந்த நின்தாள் இணையவை"—பரிபாடல் IV-62; 'விடளிக்குங்கால் நின்னினும் சிறந்த நின் தாளிணையை உடையை' —ஷை பரிபாடல் உரை: திருமுருகாற்றுப்படை அடிகள் 62, 63→உரையையும் ஒப்பு நோக்குக.

†"செங்காட்டங் குடிமேய திருவடிதன் திருவருளே பெறலாமோ திறத்தவர்க்கே" — திருஞானசம்பந்தர்—III—63-7; "திருவடியே சிவமாவது தேரில்"—திருமூலர் திருமந்திரம்—138

சொல்லே இறைவனைக் குறிக்கும் ஓர் அரும் சொல். பகவானின் பாதங்களை மட்டுமே தர்சித்தால்கூடப் பகவானையே தர்சித்த தொக்கும். ஆனால் பாதத்தை நீக்கிப் பகவானை மட்டும் தர்சித்தால் அது தர்சநத்தோடு சேராது. இதைத்தான் மேற்சொன்ன கதை மூலமாக அறிந்து கொண்டோம்.

2. தாள்களே தாங்குகின்றன

நம்முடைய சரீரத்தின் சுமையையெல்லாம் நம் கால்கள் தாம் தாங்கிக் கொண்டு நிற்கின்றன. நிற்பதோடல்லாது தூக்கிக் கொண்டு நடக்கவும்—ஏன் - ஓடவும் கூடச் செய்கின்றன. ஆக, நம் சரீரத்துக்கு ஆதார ஸ்தாநம் (தாங்கும் புள்ளிகள்) கால்களாகவே உள்ளன. அப்படியிருக்க, விராட் புருஷனாக விச்வ ரூபமெடுக்கும் பகவானின் திருவடிகளே ஸர்வ அண்ட பிண்ட சராசரங்களாகிய அனைத்தையும் தாங்கி நடத்தும் ஆதார ஸ்தாநமாக இருக்கிறபடியால்தான் அவன் திருவடிக்கு அத்தனைச் சிறப்பு !

3. அடியார்கள்

பகவானுடைய பாதத்தின் பெருமை பகவானைப் பக்திபண்ணும் பக்தர்களின் பெயரினால்கூட நன்கு விளங்கும். பகவானின் ஸர்வ அங்கங்களையும் பார்த்துத் தர்சிக்கும் அன்பர்களை, 'எண்சாண் உடம்பிற்குச் சிரஸே ப்ரதாநம்' என்றபடிப் பகவான் திருமேனியின் அங்கங்களுள் உத்தமமாகிய தலையின் பெயரால் 'தலையார்' என்றழைப்பதில்லை; 'ஸர்வேந்த்ரியாணாம் நயநம் ப்ரதாநம்'— 'கண்ணிற் சிறந்த உறுப்பில்லை'...என்றபடி அவர் ஸொரூபத்திற் சிறந்த அங்கமாகிய கண்ணின்

பெயரால், 'கண்ணுர்' என்று சொல்லுவதில்லை; வேதம் சொன்ன திருவாயின் பெயரால், 'வாயார்' என்று கூறுவதில்லை; இப்படி வேறு எந்த அங்கத்தின் பெயராலும் வழங்காமல், எல்லாவற்றிற்கும் மூலமான திருவடியின் பெயரால் 'அடியார்' என்றே வழங்குவதைக் காண்கிறோம். பகவானின் திருவடியில் ஒட்டிக் கொண்டிருந்த தூசிகளைக் கூட நம் சிரஸில் அணிந்து கொள்ளத் தகும்; அம்மாதிரியேதான் அடியார்களின் பாத தூளியுங்கூட. ‡இதைத் தான் 'பக்த பாதரேணு', 'தொண்டர் அடித் துகள்,' 'பக்த பாத தூளி' என்றெல்லாம் வழங்கப் பெறுகின்ற தொண்டரடிப் பொடியாழ்வாரின் திருப்பெயரும்' 'ஆதிசங்கர பகவத் பாதர்' என வழங்கும் ஆதிசங்கராச்சார்ய ஸ்வாமிகளின் திருநாமமும், *"வள்ளி பாத இருதயன்,' † 'திருப்புகழ் அடியார் திருவடிச் சென்னியார்' என்றெல்லாம் வழங்கப் பெறுகின்ற வள்ளிமலைத் திருப்புகழ் ஸச்சிதாநந்த ஸ்வாமிகளின் திருநாமமும் விளக்குகின்றன.

பகவானுடைய அங்கங்களுள் பக்தர்களால் ஸுலபமாகப் பார்த்து அநுபவிக்க முடிந்த ஒரே அங்கம் பாதம்

---

‡ஏசுநாதர் தம்முடைய சீடர்கள் பன்னிருவருடைய பாதங்களையும் கழுவியிருக்கிருர். (The Holy Bible - St. John-Chapter 14, Verses 5 to 15) இப்போதும் மாதா கோயிற் குருமார்கள் இத்தகைய கார்யத்தை அந்த நிகழ்ச்சியின் ஞாபகார்த்தமாகச் செய்து வருகின்றனர்.

*" இச்சையாள் வள்ளி பாத இருதயன் எங்கள் ஆசான்"
—தணிகை மணியார்

† " தருப்புகழ் வல்ல ஸுரர்மகள் நாயகன் சங்கரற்குக்
குருப்புகழ் வல்ல குமரேசன் ஷண்முகன் குன்றெறிந்தோன்
மருப்புகழ் வல்ல அருண கிரிப்பெயர் வள்ளல்சொன்ன
திருப்புகழ் வல்லவர் சீர்பாத தூளிஎன் சென்னியதே"
திருப்புகழ்ச் சிறப்புப் பாயிரம் (அபியுக்தர்கள்).

தான். நின்ற நிலையில் சற்றும் தலை நிமிராமல், ஆடாமல், அசையாமல் அப்படியே எளிமையில் பாதங்களைத் தர்சித்து விடலாம். மற்ற அங்கங்களைத் தர்சிக்க வேண்டும் என்றால் சற்றுத் தலை நிமிர்த்திக் கண்களை மேலே தூக்கியேனும் ச்ரமப்பட வேண்டியிருக்கும். அந்தக் கஷ்டம் கூட இல்லை அடிகளைக் காண. அந்த அடிகளின் அழகை *அடியார்கள்தான் காண முடியும்; அநுபவிக்க முடியும்.

4. பேதங்கள் இல்லை

தெய்வத்தின் பாதங்களை மட்டும் தொழுவதில் ஒரு விதமான சண்டை சச்சரவுகளுக்கும் இடமில்லை; பாதங்களை மட்டும் பார்த்தால் அவை சிவபாதமா அல்லது விஷ்ணுபாதமா என்றெல்லாம் தெரிந்து கொள்ள ஹேது ஏதும் இல்லை; ஏனெனில் பாதத்தின் மேலே உள்ள மற்ற அங்க அடையாளங்களைக் கண்டால்தான் சிவனு, விஷ்ணுவா என்றெல்லாம் கண்டுபிடிக்க முடியும். ஆகப் பாதங்களை மட்டும் வழிபட்டால் சிவ, விஷ்ணு பேதங்கள் எல்லாம் எழுவதில்லை; அது மட்டுமன்றி ஆபரணங்கள் ஒன்றும் அணியப் பெறாத வெறும் பாதங்களை மட்டும் தர்சித்தால் அவை, சிவன் பாதமா, தேவியின் பாதமா என்றெல்லாம் கூடக் கண்டுபிடிக்க இயலாது. ஆக, ஆண் தெய்வம், பெண் தெய்வம் என்றெல்லாம்கூட வேற்றுமை பாராட்ட வழியில்லை. இதனால் பாதத்தை லிங்காகாரம் போல் தெய்வத்தின் ரூபாரூபமாக (உருவருவத் திருமேனியாக)க் கொள்ளலாம் எனத் தோன்றுகின்றது;

*'நிமலமந அடியர் அடி அழகு காண்பார்'
—கம்பை முருகன் பிள்ளைத்தமிழ் ('கமலமட')

© Periyavaanaadaari.org ©

பாதத்திற்கு ஒரு வரி வடிவம் இருப்பதால் உருவத் திருமேனியாகவும், பாதத்தை உடையவருடைய ஸ்வயரூபம் வெளிப்படாமையால் அருவத் திருமேனியாகவும் அமைவதால் 'அருவுருவத் திருமேனி' என்னலே பொருந்தும்.

5. ஐந்தொழில் செய்தல்

பகவானின் பாதங்கள்தாம் மூவுலகங்களையும் *உண்டாக்குகின்றன; அனைத்தையும் †காக்கின்றன; ‡அழிக்கின்றன; §மறைக்கின்றன; ¶அருள் செய்கின்றன. ஆக, சிருஷ்டி, ஸ்திதி, ஸம்ஹாரம், திரோதாநம், அநுக்ரஹம் என்னும் பஞ்சக்ருத்யம் செய்கின்றன. நடராஜப் பெருமானின் (முயலகன் மீது) ஊன்றிய திருவடி §திரோபவத்தையும், தூக்கிய திருவடி 'முத்தியளித்தல்' என்னும் ‡அநுக்ரஹத்தையும் செய்கின்றன. சிவபெருமானின் திருவடிகள் ||பாதாளம் வரை ஊடுருவிப் பாயவல்லன; திருமாலின் திருவடிகள் மூவுலகையும் அளந்து விட்டன; பரமசிவனின் பாதங்கள் 64 திருவிளையாடல்களைச் செய்த போதும், ஸுந்தரர்க்காகப் பரவை

---

* "நீல மேனி வாலிழை பாகத் தொருவன் இருதாள் நிழற்கீழ் மூவகை உலகும் முகிழ்த்தன முறையே"—ஐங்குறுநூறு—கடவுள் வாழ்த்து.

† "ரக்ஷைதரு சிற்றடியும்"—திருப்புகழ்—விநாயகர் துதி-3.

‡ "கூற்று மரித்திடவே உதை பார்வதியார்"—திருப்புகழ்-789; "முதலவினை முடிவில்இரு பிறைஎயிறு கயிறுகொடு முதுவடவை விழிசுழல வருகால தூதர்கெட முடுகுவதும்..... மணநாறு சிறடியே"—சீர்பாத வகுப்பு.

§ "தோற்றம் துடியதனில் தோன்றும் திதிஅமைப்பில்
சாற்றியிடும் அங்கியிலே சங்காரம்—ஊற்றமாம்
ஊன்றும் மலர்ப்பதத்தே உற்றதிரோ தம்முக்தி
நான்ற மலர்ப்பதத்தே நாடு"—உண்மை விளக்கம்-26.

|| "பாதாளம் ஏழினுங்கீழ்ச் சொற்கழிவு பாதமலர்"
—திருவாசகம்.—திருவெம்பாவை-10.

மனைக்குத் தூது சென்றபோதும், மேலும் பற்பல ஸமயங்களிலும் பூமியை ஸ்பர்சித்தன. அந்தப் பாத ஸ்பர்சத்தைப் பூமிதேவி பெற்றிருப்பதால் †இப்பூமியில் பிறந்தால் தான் பகவத் பக்தி பண்ண முடியும்; வேறு எந்த உலகிலும் அது ஸாத்யமல்ல என்கிறார்கள் பெரியோர்கள். பகவான் பூமியில் வந்து அநுக்ரஹம் செய்ய வந்தால் முதன் முதலில் பூமியை ஸ்பர்சிப்பது தமது பாதத்தால் தான்; திருவடிகளைக் கொண்டுதானே நடந்து வர வேண்டும். அப்படி வருவதால் அவருடைய பூரண அருளைப் பெற அவருடைய திருவடித் தொடர்புதான் முதன்முதலில் பூமிக்கு வேண்டியிருக்கிறது. அவருடைய சீரடி பட்ட அந்தப் பூமியில் பிறந்து வாழும் மக்களின் பாக்யம்தான் என்னே!

6. எல்லாம் செய்ய வல்லவை

மற்றைத் தெய்வங்களெல்லாம் அபய கரத்தாலும், வரத கரத்தாலும் செய்கின்ற அநுக்ரஹங்களையெல்லாம் தேவியின் இரண்டு பாதங்களே செய்யவல்லன. ஆதலால், தேவி, அபய வரத கர முத்ரைகள் கொள்ளத் தேவையில்லை எனப் பாடுகின்றார் ஆதிசங்கரர்‡. தேவியின் பாத தூளி மஹிமையைப் பற்றியே சில ச்லோகங்கள் பாடியிருக்கிறார் அவர்.

---

† "புவநியிற் போய்ப்பிற வாமையில் நாள்நாம் போக்குகின்றோம் அவமே இந்தப் பூமி சிவன் உய்யக் கொள்கின்ற ஆறென்று நோக்கி" —திருவாசகம்-திருப்பள்ளி எழுச்சி-10.

‡ " த்வதந்ய: பாணிப்ப்யாம் அபய வரதோ தைவதகண:
த்வமேகா நைவாஸி ப்ரகடித வராபீத் யபிநயா |
பயாத் த்ராதும் தாதும் பலமபி ச வாஞ்சாஸ மதிகம்
சரண்யே லோகானாம் தவஹி சரணாவேவ நிபுணௌ ||"
—ஸௌந்தர்யலஹரி-4.

7. பாதமும் வேத புராணங்களும்

வேதம் பகவானுடைய பாதங்களை இன்னும் *தேடிக் கொண்டே இருக்கின்றது என்று சொல்கிறார்கள் பெரியோர்கள்; †வேதத்தின் முடியில் முருகனின் பாதம் விளங்குவதாகக் கூறுவார் அருணகிரியார். சிவபிரானின் திருவடியை வேதங்கள் என்றும் ‡வழிபட்டுக் கொண்டிருக்கின்றன; வேதமே அவர்க்குப் §பாதுகை பீடம்¶ முதலியன; அவர் திருவடியை வேதம் பயின்ற வேதனை ஈன்ற $ திருமாலாலேயே அறியமுடியவில்லை என்பது திருவண்ணாமலைப் புராண வரலாறு. ஆனாலும் அத்தகைய திருவடிகள்தாம் அஹங்காரம் அற்ற பக்தர் ஸுந்தரர்க்காக எளிவந்து பரவை மனைக்குத் தூது நடந்தன என்று திருவாரூர்ப் புராணம், பெரிய புராணம் முதலியன கூறும்; அத் திருவடிகளே பாணபத்திரற்காக விறகு விற்கவும், செட்டிப் பெண்களுக்கு வளையல் விற்கவும், மற்றும் மாணிக்கம் விற்கவும் மதுரை மாநகர்த் திருவீதிகளிலே ஏறுபோற் பீடுநடை போட்டன என்கிறது திருவிளையாடற் புராணம். முருக வேளின் திருவடி

---

* "சுருதி மறைகள் ..... மறையோர்கள் இவர் கூடி அறிய அறிய அறியாத அடிகள்"—திருப்புகழ்-718

† "நெறிபல கொண்ட வேதநன் முடியினு மருவிய குருநாதா"—திருப்புகழ்-289.

‡ "பல காலங்கள் வேதங்கள் பாதங்கள் போற்றும்" —ஸம்பந்தர்-திருமறைக்காடு—"பல காலங்கள்".

§ ¶ "மறையே நமது பீடிகையாம், மறையே நமது பாதுகையாம்" —திருவிளையாடற் புராணம்—உலவாக்கிழியளித்த படலம்—9.

$ "திருமாலும் பன்றியாய்ச் சென்றுணராத் திருவடியை" —திருவாசகம்-திருத்தெள்ளேணம்-1.

அழகுக்கு ஆயிர கோடி † மந்மதர்களின் அழகும் ஒருங்கு சேர்ந்தாற் கூட ஈடாகாது என்னும் கந்த புராணம்.

8. பொது வர்ணனை

பகவானுடைய பாதார விந்தங்கள் அடியார்களின் தலை மேலும், இதய தடாகத்திலும், மநமாகிற ஓடையிலும், ‡நாக்காகிய பூங்காவிலும் பூத்து வாஸனையோடு பொலிவன. அந்தப் பாதங்களின் திவ்ய தேஜஸ் அநேக கோடி §ஸூர்யப்ரகாசத்தையும் வெல்லும் என்கிறது சீர் பாத வகுப்பு. தேவர் முடி மேலும், மயிலின் உடல் நடுவிலும், திருப்புகழ்ப்பா அடியிலும் சேயோன் சீறடி பட்டதென்பர் அருணைமுநிவர். $

9. யோகிகட்குக் குருகமலத்தில் மலர்வது

பாதங்களைப் பூவிற் சிறந்த ¢தாமரைக்கு ஒப்பிடுவது வழக்கம். யோகம் பயின்று நெறி நின்றால் நம் உடலில் மூலாதாரச் சேற்றில் முளைத்து, முதுகுத் தண்டாகிய

---

† "ஆயிர கோடி காமர் அழகெலாந் திரண்டொன் றாகி மேயின எனினும் செவ்வேள் விமலமாம் சரணந் தன்னின் தூயநல் எழிலுக்கு ஆற்றாது"—கந்த புராணம்-4-13-439

‡ "பாவாணர் நாவிலுறை இருசரண"—திருப்புகழ்-149.

§ "பலர்புகழ் ஞாயிறு கடற்கண் டாஅங்கு ஓவற இமைக்கும் சேண்விளங் கவிரொளி உறுநர்த் தாங்கிய மதனுடை தோன்றாள்"—திருமுருகாற்றுப் படை, வரிகள் 2-4.

$ 'தாவடி யோட்டு மயிலிலும் தேவர் தலையிலும்என் பாவடி ஏட்டிலும் பட்டதன்றோ..... பெருமான் மருகன்தன் சிற்றடியே"—கந்தரலங்காரம்--15.

¢ "தாமரை புரையும் காமர் சேவடி"—குறுந்தொகைக் கடவுள் வாழ்த்து.

ஸுஷும்நா நாடி வழியே நாளமாய் மேலே வளர்ந்து, மணிபூரகம் என்னும் நீர்மட்டத்தைத் தாண்டி அநாஹதம், விசுத்தி, ஆக்ஞை வழியே ப்ரஹ்மக்ரந்தி, விஷ்ணுக்ரந்தி, ருத்ரக்ரந்தி முதலிய முடிச்சுகளை யெல்லாம் அவிழ்த்துக் கொண்டு மேலே செல்லும் குண்டலினி சக்தி, ஸஹஸ்ராரம் என்னும் த்வாதசாந்த ஸ்தலத்தில் குரு கமலமாக – ஆயிரத்தெட்டு இதழ்த் தாமரையாக-ஞாந ஸூர்யன் உதிக்கக் கண்டு மலர்கிறது. நமது பாதக மலங்கள் அகல, அதன் மேலே தெய்வத்தின் பாத கமலங்கள் பதிந்து விடுகின்றன. ஸூர்யனைக் கண்டதும் தாமரை மலர்வது இயற்கை. அங்ஙனமே பக்தர்களின் உள்ளங்களில் ஞாந ஸூர்யோதயம் ஏற்பட்டு விட்டால் பகவானுடைய பாத பங்கஜங்களும் அங்கே தாமாகவே மலர்ந்து விடும். 'திணியான மநச் சிலைமீ துனதாள் அணியார் அரவிந்தம் அரும்பு மதோ?' எனக் கேட்கிறார் அருணகிரியார் (கந்தரநுபூதி-6).

10. ராம பாதுகை

விச்வாமித்ர மஹர்ஷியோடு காட்டுவழி நடக்கையில் ஸ்ரீ ராகவனுடைய பாத ஸ்பர்சத்தால் ஒரு கல் பெண்ணாக மாறிற்று; அவள்தான் அஹல்யை; இதுபோல எவ்வளவோ வைபவங்களை அப் பாதம் செய்துள்ளது. பகவான் ஸ்ரீ ராமனுடைய பாதுகைகளைப் பற்றியே ஆயிரம் ச்லோகங்கள் எழுதிவிட்டார் ஸ்ரீ நிகமாந்த தேசிகர். ஸ்ரீ ராமன் காட்டில் இருந்த போதிலும் கூட அவர் இருக்க வேண்டிய இடத்தை அவருடைய பாதுகைகளே பூர்த்தி செய்யட்டும் எனப் பரதாழ்வார் பாதுகா பட்டாபிஷேகம் பண்ணி அயோத்தியைப் பதினான்கு வருஷங்கள் அரசாட்சி செய்து வந்தார். அந்தப் பாதுகைக்கே அவ்வளவு மஹிமையென்றால் எந்தப் பாதங்களின் ஸ்பர்சம் பட்டு அந்தப் பாதுகைகளுக்கு அவ்வளவு பெருமை வந்ததோ அந்தப் பாதங்களின் மஹிமையை யாரால் எடுத்துரைக்க முடியும்?

11. பகவானும் பக்தர்களும்

பகவான் ஸ்ரீமந் நாராயணன் பக்தர்களின் பாதங்களையேதன் நெற்றியில் ஊர்த்வ புண்ட்ரமாக (நாமமாக)

அணிந்துகொண்டிருப்பதாக ஸித்தாந்தம். ஸ்ரீவைஷ்ணவர்கள் முத்ரைகளில் ஒருபுறம் சங்கமும், மறுபுறம் சக்ரமும், இடையே (திருமண்) நாமத்திற்குப் பதிலாக இரண்டு பாதங்களே ஊர்த்வ முகமாக நிறுத்திவைக்கப் பெற்றிருப்பதும் இதையே வலியுறுத்தும். ஆதலால் தான் திருப்பதியில் அவருடைய நெற்றித் திருமண் ப்ரஸாதத்தை 'ஸ்ரீபாதரேணு' என்று இன்றும் வழங்குகிறார்கள். பக்த ஸ்ரீ பாதத்தைப் பகவானே நெற்றியிற் சூடிக் கொண்டிருக்கிறானென்றால் பக்த பாததூளியின் மஹிமை அநுபவித்தவர்களுக்குத்தான் தெரியுமே அன்றி ஸாமான்யர்கள் அறியும் தரத்ததன்று. குறத்தி வள்ளியின் பாதத்தைக் குமரவேள் பணிந்தார் என்பது ஆண்டவன் அடியார்க்கு எளியவன் என்னும் தத்வத்தைக் காட்டுகின்றது. "பணி யா என வள்ளிபதம் பணியும் தணியா அதிமோஹ தயாபரனே" கந்தரநுபூதி 6 மெய்ஞ்ஞாநிகளின் பாத மஹிமையைக் கீழ்க்கண்ட ரிபு கீதைப் பாட்டு நன்கு விளக்குகிறது. "ஞாலம் உண்டவன் தலைமிசை சுமப்பன்மெய்ஞ் ஞாநிவேண் டுவதெல்லாம், ஆலம் உண்டவன் அவன்பினே திரிகுவன் அவனடித் துகட்கன்றோ! சீல மன்னரும் மற்றுள தேவரும் திசை திசை தொழுதேத்தக், காலி ரண்டையும் தலைமிசை வையெனக் கழறுவன் கமலத்தோன்". புது வீடு கட்டினாலோ, வேறு ஏதாவது புண்ய கார்யங்களை நடத்தினாலோ அவ்விடத்தில் பெரியோர்களை அழைத்து அவர்கள் பாததூளிபடவைத்தல் நம்நாட்டு வழக்கம். மேனாட்டிலுங்கூடத் தமது சீடர்கள் பன்னிருவருள் ஒவ்வொருவரின் திருவடிகளையும் குறித்த நன்னாளொன்றில் நன்னீர் விட்டுக் கைத்தலங் கொண்டு கழுவி, அவர்கட்கு உபசாரங்களெல்லாமும் செய்து, தொழுது, தாம் 'அடியார்க்கு அடியவர்' என்பதை ஏசுநாதர் வெளிப்படுத்தினார் என விவிலிய வேதமும் (BIBLE) கூறுகின்றது.

பகவத் பாத ஸேவை பண்ணிக் கைங்கர்ய பரர்களாயிருக்கும் கருடாழ்வாருக்குப் 'பெரிய திருவடி' என்றும், ஆஞ்ஜநேயருக்குத் 'திருவடி, சிறிய திருவடி' என்றும் பெயர்கள் வழங்குவதாலேயே திருவடிப் பெருமை விளங்கும். ஸ்ரீ வைஷ்ணவ ஸித்தாந்த ப்ரகாரம், திருக்கோயில்களில் ஸேவார்த்திகளுக்குச் சடாரி ஸாதிப்பதென்பது ஒரு பழைய வழக்கம். பகவானின் பாதத்

திலேயே ஒன்றிவிட்ட நம்மாழ்வார்-சடகோபரின் திருவடி ஸ்பர்சம் நமக்கும் ஏற்பட வேண்டும் என்பதற்காகத் தான் அவரது இரண்டு பாதங்களையே தலைமேல் ஸ்பர்சிப் பித்து எடுப்பார்கள். இதிலிருந்து இந்த வழக்கம் உண் டாயிற்று. பெருமாள் கோயில்களில் விஷ்ணு பாதத்திற் கும், சிவன் கோயில்களில் சிவ பாதத்திற்கும் கோயில் மூலஸ்தாநங்களைத் தவிரத் தனியேயும் ஸந்நிதிகள் இருப்பதுண்டு; கயையில் உள்ள விஷ்ணு பாதம் பெரியது.

12. திருவடி தீக்ஷை

குரு, சிஷ்யனுக்கும், ஆண்டவன், அடியார்களுக்கும் செய்யும் தீக்ஷைகள் பல. அவை ஸ்பர்ச தீக்ஷை, நயந தீக்ஷை, மாநஸ தீக்ஷை, மந்த்ர தீக்ஷை, ப்ரணவ தீக்ஷை, ஹஸ்த மஸ்தக சையோக தீக்ஷை, பாத தீக்ஷை எனப் பலவகைப்படுவன. அவற்றுள் பாத தீக்ஷை மிகச் சிறப்புடையதும், முக்யமானதும் ஆகும். *நால்வராதி யோர், ஆழ்வார்கள், அருணகிரிநாதர், ராமலிங்க ஸ்வாமிகள், †அபிராமிபட்டர் முதலிய அடியார்கள் எல் லாம் தெய்வத்தின் பாத தீக்ஷையைப் பெற்றவர்களே. அருணகிரியார் ‡திருவண்ணாமலையிலும், $வயலூரிலும் முருகவேளின் திருவடி தீக்ஷை பெற்றார்.

13. உருவ வர்ணனை

பகவானுடைய பாதங்கள் செக்கச் செவேலெனச் செந்தாமரை மலர்போல மலர்ந்து வழவழவென்று அழகாக விளங்கும்; பஞ்சை விட மிருதுவாக இருக்கும்.

---

* "திருவடியென் தலைமேல் வைத்தார் நல்லூரெம் பெரு மானார் நல்லவாறே" —திருநாவுக்கரசர்.

† "நின் பாதம்என்னும் வாஸக் கமலம் தலைமேல் வலிய வைத் தாண்டுகொண்ட நேசத்தை என்சொல்லுவேன்?" —அபிராமி அந்தாதி.

‡ "அருணை நகர்மிசை கருணையொ டருளிய-பரம ஒருவச நமும்இரு சரணமும் மறவேனே" —திருப்புகழ்-513.

$ "வயலி நகரியில் அருள்பெற மயில்மிசை உதவு பரிமள மதுகர வெகுவித வநஜ மலரடி கனவிலும் நனவிலும் மறவேனே" —திருப்புகழ்-934.

நடந்தாலோ, தேவிமார் வருடினாலோ மேலும் சிவப்படையும் அளவுக்கு அவ்வளவு மார்தவம் (நுட்பம்) படைத்தவை; கழல், கிண்கிணி, சிலம்பு, சதங்கை, தண்டை, வெண்டையம், கொலுசு, பாடகம் முதலிய காலணிகளை அணிந்திருக்கும்; உள்ளங்காலில் சங்கரேகை, சக்ரரேகை, பத்மரேகை, வஜ்ரரேகை, அங்குசரேகை, த்வஜரேகை முதலியன படர்ந்திருக்கும்; கால்விரல்களின் நகங்கள் அன்பர்களின் அஹ இருளைப் போக்க வல்ல விசேஷ காந்தியோடு விளங்கும்; செம்பஞ்சுக் குழம்பு பூசப் பெற்றிருக்கும்; மருதோன்றி இலை அரைத்துப் பூசினது போல் சிவப்பூட்டப் பெற்றிருக்கும்; மஞ்சள் குங்குமங்களால் நலங்கு இடப்பெற்றிருக்கும். தெய்வத்தின் திருவடிச் சிறப்பு பேச்சுக்கும், எழுத்துக்கும், கற்பனைக்கும், விவரணைக்கும் அடங்காதது.

14. திருவடிப் பெருமை கூறும் நூல்களுட் சில:

1. திருவடித் திருத்தாண்டகம்;
   திருவடித் திருவிருத்தம் முதலியன
   —திருநாவுக்கரசு நாயனார்
2. பாததூளி மஹிமா (ஸௌந்தர்யலஹரி)
   —ஆதிசங்கரர்
3. பாதுகா ஸஹஸ்ரம் —வேதாந்த தேசிகர்
4. பாதாரவிந்த சதகம் (மூக பஞ்ச சதீ) —மூக கவி
5. சீர்பாத வகுப்பு —அருணகிரிநாதர்
6. திருவடிப் புகழ்ச்சி —ராமலிங்க ஸ்வாமிகள்
7. தேவார, திருவாசக ஒளிநெறி & ஒளிநெறிக் கட்டுரைகள்;
8. கந்தர் கழல் எழுபது;
9. கந்தர் கழல் நூற்றைம்பது
   —டாக்டர்-தணிகைமணி-ராவ்பஹதூர் வ. சு. செங்கல்வராயப்பிள்ளை, M.A.
10. ஸத்குருநாதர் திருவடிப் புகழ்ச்சி
    —பாலகவி எம். கே. வேங்கடராமனார்
11. தவளகிரி முருகன் திருவடி வகுப்பு
    —அருளிசை ஸு. வே. ஸுப்ரம்மண்யம்
12. வைஷ்ணவி ஆலய பாலமுருகன் திருவடி வகுப்பு
    —அருட்கவி ஸாதுராம் ஸ்வாமிகள்.

(முற்றும்)

© Ramanamahari.org

सदा विद्याऽनुसंहतिः

- **Answers by AtmAnandanAtha**

1. What is the difference between Lopamudra vidya and Caitanya vidya, it looks same?

Yes, both look same. The Lopamudra vidya is a Hadi vidya revealed to Devi Lopamudra, wife of Sage Agastya. The same is said as one of the rasmi mala mantras called by Bharagava rama as svasvarUpa vismarshini- that which enlightens the form of self- aatmaa. In the pascimaamnaaya the same is called as haadi vidyaa lopamudropAsitA. In the anuttaraamnaaya it is one of the shodasha mUla vidya, called as caitanya vidyaa. Just as a person is a son, husband, father, colleague, boss, similarly the same mantra is called as the function it performs in that particular context. This vidya does not have the eleventh vowel –'e'kaara, has 'ha' and 'sa' extra in numbers. Thus, we find it will point to the revelation of the shiva sakti bhAva in that sadhana in deeper context at those appropriate places.

2. How are parayanA's important in sadhana, what is their aggregate number, any special parayanA is there?

Parayana is an important part of tantric sandhya – there are four parayanas associated with three sandhyas- the Natha, ghatika, tattva and nityaa. Other than these 'mantra' and 'naama' parayanaa are seen in practice.. Mere repetition on japa counts will lead to a mechanical, dry monologue in sadhana. Hence for the mind to be attentive and focussed on japa, these parayanas are insisted. In a tantra called saubhagya tantra we find thirty six varieties of parayanas. In Paramaananda tantra we find the special parayana called sricakra parayana , in saubhagya kalpadruma a more complex parayana called kaala cakra paarayana is seen- these are apart from the thirty six already seen. A main identity of all the parayanas is that they are cyclic in nature. So a real focus to keep the track is needed by the sadhaka indulging in parayanas.

© Purnananda Lahari.org ©

3. Are there time slots for sadhana of deities in Sri Vidya karma?

Yes according to the Parasurama kalpa Sri Vidya upasana is the adoration of five deities, which are Ganapathy, Lalita, Syamala, Varahi and para. The sutra says:-

mahā-vidyā-"rādhana-pratyūhâpohāya gāṇanāyakīṃ paddhatim āmṛśet || PKS_2.1 ||

lalitā prāhṇe | aparâhṇe śyāmā | vārtālī rātrau | brāhme muhūrte parā || PKS_10.55 ||

We are directed to worship Ganapati for removal of all obstacles time is not specified, Lalita in the forenoon, Shyamala in the afternoon, Varahi in the night, Para in the dawn, and with their respective saparya paddhati as said in the respective chapters.

4. When we ring the bell (ghanta) during pooja , how to hold it, is it in the left hand or right hand?

The ringing of bell is one of the most auspicious signs in our tradition. The sound, being the aspect of space the first element, welcomes the positive energy- the devatas and pushes out the negative energy – the asura. The bell should not be kept as such on the ground; it has always to be placed on a pedestal (Plate). After the initial ghanta pooja during the commencement of the saparya ritual, ring the bell with the right hand. Later, at all times, it can be held in the left hand for ringing. At no time the bell should be rung holding below the waist level, mostly at heart level it has to be rung, in tune with the anahata dvani.

5. Do we need two seats for pooja, isn't one enough?

Yes we need two seats during saparya. One is the initial seat on which the sadhaka will sit after mandala praveshana to perform acamana, sankalpa etc. Then comes the aasana pooja , the worship of the main aasana in which saparya is to be done, After this pooja only , we can sit on the main aasana. So in practical use, we need two aasana. Care must be taken as to avoid moving this second aasana. Only the Sadhaka, his sakthi or his Guru(if present) can sit on this aasana.

© Purnanandalahari.com ©

எண்ணா யிரத்தாண்டு யோகம் இருக்கினும்
கண்ணார் அமுதினைக் கண்டறி வாரில்லை
உண்ணாடிக் குள்ளே ஒளியுற நோக்கினால்
கண்ணடி போலக் கலந்துநின் றானே

- திருமந்திரம் **603**

Eight thousand years of yOgA dear
Might not take you to Him near
Light you seek within you clear
Right like mirror you merge full gear